Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन ज्ञान

साप्ताहिक

२२ फरवरी
१९७६

●

मूल्य
५० पैसे

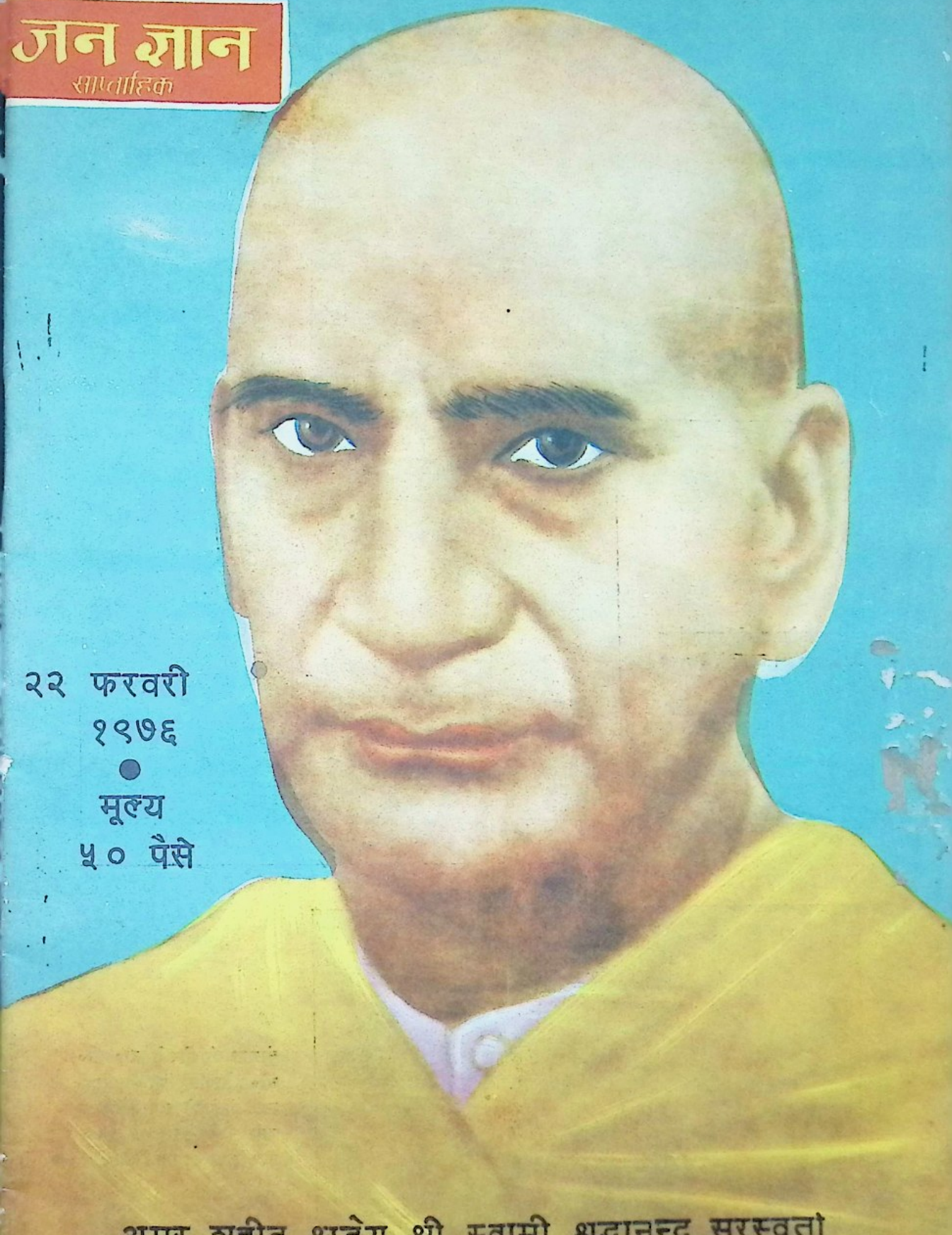

अमर शहीद श्रद्धेय श्री स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (साप्ताहिक) विमोचन समारोह का सचित्र विवरण

जन-ज्ञान (साप्ताहिक) की संपादक व दयानन्द संस्थान की प्रधानमंत्री पंडित राकेश रानी ने प्रथम प्रति सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी को भेंट की।

卐

श्री रामगोपाल जी साप्ताहिक जन-ज्ञान को ध्यान से देख रहे हैं।

卐

संस्थान की ओर से रा० सा० चौ० प्रतापसिंह जी ने राजधानी के पुराने समाज सेवी व कर्मठ आर्य नेता श्री देसराज चौधरी का स्वागत किया।

卐

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

जन - ज्ञान

साप्ताहिक

सम्पादक
राकेश रानी

सह-सम्पादक
कु० आभा
दूरभाष : ५६६६३९

पता :
वेद मंदिर
१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग
[निकट ३१-नाईवाला]
करौल बाग, नई दिल्ली-५

वार्षिक मूल्य २०)
विदेश में ४ पौंड : हवाई डाक से
२ पौंड : समुद्री डाक से
—(आजीवन ३०१)—

वर्ष १ : अंक २

द्वितीय अंक
१० फाल्गुन : सम्वत् २०३२

दयानन्दाब्द : १४९
सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३०७६

क्या निश्चय है आपका....

मन्दिर में धर्म नहीं है, मस्जिद में धर्म नहीं है, गिरिजाघर में धर्म नहीं है। किसी भी पूजा स्थान में धर्म नहीं है।

पंडित, मौलवी, पादरी या धर्म गुरुओं के पास 'धर्म' नहीं है। जहां-जहां भी हम धर्म की खोज करते हैं वहाँ कहीं भी तो धर्म नहीं है।

फिर वह कहां है.....

'धर्म' आपके भीतर है, आपके कर्मों में है। व्यवहार-आचरण और चिन्तन में धर्म आपके मन की झंकृतियों में है। वह आपके मस्तिष्क के विचारों में है।

जो आप सोचते हैं, जो आपको प्रेरणा देता है, वही आपका धर्म है। जिसके आधार पर आप अपने जीवन-दर्शन का निर्माण करते हैं, वही, बस वही तो आपका धर्म है। जब हम कहते हैं कि हमें आपको बदलना है, तो हमारा अर्थ होता है कि हम आपके मन-मस्तिष्क की प्रेरणाओं को बदलना चाहते हैं।

कोई अधर्म को ही अपना धर्म मान कर चल सकता है। पर इस चलने में उसे कष्ट मिलेंगे। चिन्ता मिलेगी, पीड़ा पहुंचेगी और वह अपने जीवन को भार समझ कर ढोएगा।

इसलिए जहां कष्ट है, चिन्ता है, पीड़ा है, व्यथा है, रुदन है वह 'धर्म' का सत्य स्वरूप नहीं है। वहाँ अधर्म धर्म के सिंहासन पर बैठा है।

'धर्म' जहाँ है वहाँ आनन्द होगा, शांति होगी, प्यार होगा, उमंग होगी, स्वर्ग होगा और होगा ऐसा वातावरण, कि हम समझेंगे कि स्वर्ग हमारे घर आंगन में आ गया है।

जैसे सूर्य के उदय होने पर अंधकार नहीं रह सकता, उसी तरह 'धर्म' के रहने पर कष्ट, क्लेश नहीं रह सकते। मन में पीड़ा क्रीड़ा नहीं कर सकती।

आज 'धर्म' विस्मृत है। मत-मजहब वाद और पूजा पाठ कर्म कांड धर्म मान लिए गए हैं। धर्म मानने की वस्तु बन गयी है, आचरण की नहीं, और परिणाम आपके सामने है।

क्या आप सुखी हैं ?

क्या आप जीवन में आनन्द अनुभव करते हैं ? यदि नहीं तो विश्वास कीजिए आप धर्म की छाया से बहुत दूर हैं।

हम आपको 'धर्म' से परिचित कराने के लिए प्रयत्नशील हैं। हमारी इच्छा है कि 'धर्म' की पावन गंगा आपके जीवन में आए और आपके कलुष बहाकर आपको पवित्र कर दे।

क्या आप दुःखों से छूटना चाहते हैं ? यदि उत्तर 'हाँ' में हो तो हमारे साथ चलिए। हम, आपके जीवन को सत्य-धर्म और आनन्द से परिपूर्ण कर देंगे।

ज्योति की किरणें आपके द्वार पर आयी हैं। उनका स्वागत करें या ठुकराएं यह तो आप ही के हाथ में है। बताइए क्या निश्चय है आपका ?

—भारतेन्द्रनाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

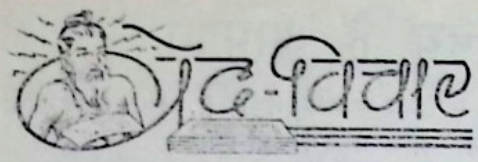

—आचार्य श्री प्रियव्रत विद्यावाचस्पति

सूर्य और चन्द्र की राह पर चलो !

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव
पुनर्ददताऽघ्नता जानता संगमेमहि ॥

अर्थ — (सूर्याचन्द्रमसाविव) सूर्य और चन्द्रमा की तरह (स्वस्ति) कल्याण के (पन्थाम्) मार्ग पर (अनु चरेम) चलते रहें (पुनः) और (ददता) दान करने वाले (अघ्नता) अहिंसा-स्वभाव वाले (जानता) ज्ञानी पुरुषों की (संगमेमहि) संगति करते रहें।

हम सूर्य और चन्द्रमा की तरह कल्याण के मार्ग पर चलते रहें। सूर्य चन्द्रमा कल्याण के मार्ग पर चलते हैं,हमें भी उन्हीं की तरह कल्याण की राह पर चलना चाहिए। सूर्य और चन्द्र का मार्ग कल्याण का मार्ग किस कारण बन जाता है ? इसके दो कारण हैं। एक तो यह कि सूर्य चन्द्र की गति नियमित है। इतनी नियमित कि वर्षों पहले सूर्य और चन्द्र ग्रहणों का पता लग जाता है। सूर्य-चन्द्रादि पिण्ड यदि नियमित गति से न चलें तो परस्पर टकराकर ब्रह्माण्ड नष्ट भ्रष्ट हो जाए। इनकी नियमित गति के ही कारण वर्ष में छः ऋतुएं बनती हैं—सरदी, गरमी और वर्षायें आती हैं। और दूसरे यह कि सूर्य-चन्द्र अपनी नियमित गति से समय-समय पर जो ऋतुएं बनाते हैं उनका फल लोक कल्याण होता है। हर एक ऋतु से खास-खास प्रकार के लाभ संसार को मिलते हैं। सूर्य-चन्द्र का प्रकाश और गरमी, उनका आकर्षण और विकर्षण सब संसार के कल्याण के लिए ही होते हैं।

हमें भी सूर्य-चन्द्रमा की तरह "स्वस्ति" के—कल्याण के मार्ग पर चलना चाहिए। हमारा जीवन नियमित हो —हममें समय पर सब कार्य करने की क्षमता हो और हमारी सब शक्तियां संसार का कल्याण करने वाली हों।

पर हमारे अन्दर वह शक्ति कैसे आए जिसका हमने सूर्य-चन्द्र की तरह संसार के कल्याण में व्यय करना है। इसका उत्तर मन्त्र के उत्तरार्द्ध में दिया गया है। हमें अपने अन्दर योग्यता हासिल करने के लिए ऐसे पुरुषों का संग करना चाहिये जो दानी हों—अपनी शक्तियों को संसार के उपकार में लगाते हों, जो अहिंसा शील हों—संसार के प्राणियों के दुःख-दर्द मिटाने की भावना से जो धर्म करते हों, जो ज्ञानी हों—तरह-तरह की विद्याओं का तत्व-उपदेश हमें कर सकते हों। ऐसे लोगों की संगति में पड़ने से हमें शक्ति प्राप्त होती है जिसका हम सूर्य चन्द्र की तरह लोक-कल्याण में व्यय कर सकेंगे।

चित्र-परिचय

प्रथम पृष्ठ का चित्र—स्वनामधन्य श्री स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती का है। आप ने देश और जाति की जो सेवाएं की हैं उनकी तुलना नहीं है।

महात्मा गांधी उन्हें अपना बड़ा भाई मानते थे। और राष्ट्र नायक पं० जवाहर लाल नेहरू उनके अनन्य प्रशंसकों में से थे।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय उनका जीवित स्मारक आज भी उनकी स्मृति निरंतर दिला रहा है।

आज आवश्यकता है कि सभी उनके जीवन से प्रेरणा लेकर तप-त्याग और बलिदान को जीवन का आदर्श बनाएं। गुरुकुल फिर गुरुकुल बने और वर्तमान के तूफान को रोकने में हम समर्थ हों।

अंतिम पृष्ठ का चित्र—प्रकृति में लीन एक साधक का है जो प्रभु की फुलवारी को देखकर उस परम पिता के ध्यान में मग्न है। प्रकृति का सौन्दर्य साधक के मानस को पावन कर रहा है।

—संपादक

प्रभु मैं कैसे करूं गुणगान ?

तुम विचित्र हो, तुम हो पावन
तुम हो त्राता, तुम मन भावन
तुम सर्वज्ञ नियन्ता हो प्रभु,
तुम्हारा कैसे करूं खवान ?
बुद्धि और विद्या से वंचित
किए न मैंने सुकर्म संचित
तुम अद्भुत हो मेरे स्वामी,
बिन रसना रसखान !
कर बिन सकल सृष्टि रचते हो
बिना नेत्र सब कुछ लखते हो
बिना हाथ सबको धरते हो
तुम जीते बिन प्राण !
पंचतत्व की देह बनाई
तुमने सारी धरा रचाई
पड़ कुसंग में हम हैं भूले,
प्रभुवर तेरा नाम !

—ईश्वर सिंह (नैटाल)

उपरोक्त पंक्तियों के लेखक महर्षि के अनन्य भक्त नैटाल (अफ्रीका) निवासी श्री ईश्वर सिंह की आयु यद्यपि १०७ वर्ष है किन्तु उनका उत्साह युवकों को मात देता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्
कृष्णवन्तो विश्वमार्यम्
नवज्योति
वेदाः
हिन्दी साप्ताहिक
नई दिल्ली

वर्ष १ ● रविवार २२ फरवरी, १९७६ : १० फाल्गुन २०३२ ● अंक २

आओ ! मेरे साथ.....

अंधकार में मैं प्रकाश की,
ज्योतिर्मय किरणें ले आया,
स्वप्न लोक में जागृत पथ की,
झकृतियाँ मैं बजा रहा हूँ ।
गीत विजय के सुना रहा हूं ।
धर्म टूट कर कांप रहा था,
अंधकार में भटका भटका,
ऐसे क्रन्दन के स्वर को मैं,
जीवन का संगीत सुनाता,
द्वार तुम्हारे आ बैठा हूं ।
मैं आया हूं जीवन का
आलोक दिखाने, राह जताने !
तुम कैसे बैठे हो, मौन
यहाँ पर, मेरे साथ बढ़ो अब आगे !
मैं जीवन से तुमको मिला सकूंगा ।
मेरे प्रिय, ओ अन्तर्यामी !
अंधकार से युद्ध घोषणा,
करते-करते जीत रहा मैं,
सत्य मान लो, मैं जीतूँगा !
नयी सुबह में नयी किरण
नर्तन कर लेगी ।
ओ मेरे विश्वास जागकर,
मुझ को शक्ति प्रदान करो रे !
विजय वरण का मन्त्र दान कर,
गति को जीवन दान करो रे ।
सत्य जगा है स्वयं देख लो ।
दुनियाँ वालो ! सत्य जगाकर ।
गुंजा रहा है,धर्म ध्वजा का मोहक द्वार
धरती सारी स्वर्ग बनेगी
स्वर्ग बनेंगे सब परिवार
इसीलिए तो कर्म कर रहा ।
तुम्हें बुलाता हूं मैं भाई !
आओ ! मेरे साथ !!
छोड़ न देना हाथ !!

—भारतेन्द्रनाथ

अपनी बात

आओ, हम एक हो जाएं

आर्यसमाज अजेय है, उसके सिद्धान्त सत्य-ज्ञान-युक्ति और तर्क पर परखे हुए विज्ञान सम्मत हैं । उसकी विचार धारा जीवन की अमर गंगा है । उसका संदेश 'अमृत' है जो धरती से दुःख मिटाकर सुख की वर्षा करने का सामर्थ्य रखता है ।

फिर भी कुछ ऐसा है जो हमारी गति को रोक रहा है । उस रुकावट को सभी अनुभव करते हैं, पर व्यवहार में नहीं लाते । कहीं कोई ऐसी त्रुटि है जिसे सुधारे बिना आगे बढ़ना असंभव है ।

आर्यसमाज की स्थापना का १०१ वाँ वर्ष चल रहा है । भारतीय परंपरा के अनुसार १०१ की संख्या सभी शुभ भावनाओं की सूचक है । इसलिए यदि इस वर्ष में हम अनेकता को एकता में बदल दें तो फिर विश्व विजय में देर न लगेगी ।

संगठन सूक्त का हम निरंतर पाठ करते हैं । संगठन के हम गीत गाते हैं पर व्यवहार में विघटन हमारे स्वभाव का अंग बन चुका है । केवल इसी रोग के कारण हम लक्ष्य से बहुत दूर जा पहुंचे हैं ।

हमारा आग्रह है कि जीवन के १०१ वें वर्ष में प्रत्येक महर्षि दयानन्द का अनुयायी प्रेम श्रद्धा-एकता और संगठन को जीवन में धारण करे । अधिकार के स्थान पर कर्तव्य को पहचाने । यदि किसी से हमारे मतभेद भी हों तो भी हम उसे अपने से दूर करने के स्थान पर प्यार के मंत्र से उसे निकट लाएं ।

समय बदलता है, जीवन बहता है । आज का युग जो चाहता है उसका प्रतिदान हम संगठित होकर ही दे सकते हैं । अगर हम आप सब ऋषि के अनन्य भक्त बन जाएं । हमारी मंजिल एक हो तो, हममें से अनेकता के भाव स्वतः समाप्त हो जाएंगे ।

आज अगर हमने अपने को नहीं बदला, अपने सोचने के ढंग को परिवर्तित न किया तो हमारा भविष्य क्या होगा, यह सोचते हुए भी भय लगता है । इसलिए हमारी प्रार्थना है कि आज स्वार्थ को जलाकर प्यार की राह पर सभी चलें ।

हमें दयानन्द का काम करना है । कोई कैसे भी करे, करे तो सही । हम आगे बढ़ें तो सही । नए निर्माण के लिए मार्ग बने और ऋषि के सैनिक 'ओ३म् पताका लेकर पाप-ताप-पाखंड अज्ञान हटाकर 'धर्म' स्थापना के लिए अभियान करें ।

ऋषि पर जिन्हें श्रद्धा हो,
उनसे हमें कहना है कि—
आओ, हम एक हो जाएं

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (साप्ताहिक) का विमोचन समारोह

प्रो० शेर सिंह जी को श्री रामगोपाल जी जन-ज्ञान साप्ताहिक की प्रथम प्रति भेंट कर रहे हैं।

दिल्ली के प्रसिद्ध सर्जन डा० श्रीवास्तव का स्वागत रा. सा. चौ० प्रतापसिंह कर रहे है। पीछे खड़ी हैं श्रीमती ज्योत्स्ना जी।

उपस्थित प्रमुख आर्यजन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

□ भारतेन्द्रनाथ

गुण्डापन बढ़ रहा है : प्रलय कौन रोकेगा ?

मस्तिष्क की उधेड़ बुन में नहीं, जीवन की वास्तविकता पर खड़े हो, जब हम चलते हैं, देखते हैं, और सोचते हैं तो हमें स्पष्ट अनुभव होता है कि आज राष्ट्र में गुंडापन बल पा बढ़ता जा रहा है।

घूमने निकलिए, सड़क पर, आप देखेंगे कि चलने वाले मनुष्य भूखे भेड़िए की तरह कुछ निगल डालने के लिए, लपलपाती जीभ किए भौंकते गुर्राते से चल रहे हैं। शहरों में मिटी लुटी मानवता की अर्थी संजोए, अन्दर से सूखे, बाहर से हंसने का प्रयत्न करते हुए मनुष्य नामधारी जीव चारों ओर फैले दिखलाई पड़ेंगे। दूसरों के कष्टों को देखकर हँसने की प्रवृत्ति, परायी दुर्बलता से लाभ उठाने की भावना, और अपनी मान मर्यादा को स्वाहा कर, दूसरों की इज्जत से खिलवाड़ करते रहना आज के साधारण जन का स्वभाव बन चुका है। क्या होगा इसका अन्त ? हम यही सोच रहे हैं।

अगर आप को हमारी बात पर विश्वास न हो तो आप अपनी ही नजर दौड़ाइए, चारों ओर, आपको लगेगा कि आत्मा शून्य नर कंकाल, अपनी बर्बादी के बाद सभी की बर्बादी चाहता हुआ अट्टहास कर रहा है। पिशाचों से चेहरे, राक्षसों सा खिलवाड़ पशुओं सी उच्छृंखलता मानव का स्वभाव बनती जा रही है। कहाँ है स्नेह, प्रेम, सौहार्द, भ्रातृत्व, नैतिकता, इन सबकी तो होली जलाकर महानाश की काल घटा को उमड़ घुमड़कर आने का आमंत्रण दिया जा रहा है। जहां मानवता का अवशेष है भी, वहाँ भी वह सिसक रही है, चीख रही है, रक्षा के लिए आर्त पुकार कर रही है। उसकी यह पुकार कहाँ, कब और कौन सुनेगा ? यही प्रश्न है।

इसके साथ ही यह प्रकट सत्य है कि इस बढ़ते हुए गुण्डेपन को यदि न रोका गया तो देश का उत्थान असंभव है। सड़कों की गुंडागर्दी, सिनेमाहालों की उच्छृंखलता, तांगे और रिक्शा के अड्डों का जंगलीपन और कदम-कदम पर होने वाले अश्लील और अभद्र प्रदर्शन कैसे राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करेंगे ? यह समझ नहीं आता ! रात के १२-१२ बजे तक शराब और ताड़ी के नशे में मदहोश मनुष्य पशु राष्ट्रोत्थान में कैसे सहारा बनेंगे ?

सोचिए !

और सोचिए, सभ्य कहाने वाला उच्चवर्ग जिस के सम्मुख, विलासिता, फैशन, रंगरेलियों और पैसे को खर्च करने के सिवाय और कोई लक्ष्य ही नहीं है, क्या कभी भी कुछ भलाई की बात सोच सकेगा ? यदि नहीं, तो क्या राष्ट्रोत्थान के लिए चिन्तित मनुष्यों का यह प्रथम कर्तव्य नहीं है कि वह मानवता के पतन को रोकने के लिए कोई प्रभावशाली पग उठाए।

इससे पहले हमें यह सोचना होगा कि यह राक्षसी प्रवृत्ति मनुष्य पर क्यों हावी होती चली जा रही है ? मनुज के भीतर का बल क्यों पशु बनता जा रहा है ? और यदि हम गहरायी से कारण की खोज करने चलेंगे तो हमें ज्ञात होगा कि सभी ने अपने लक्ष्य को छोड़ दिया है। हमें पता ही नहीं है कि हमने करना क्या है, क्यों हमें यह सुन्दर जन्म मिला है, बुद्धि मिली है, शरीर और मन मिला है ? क्या इसीलिए कि हम इसके द्वारा अशांति को बढ़ाते रहें, स्वयं जल जल कर भी दूसरों को जलाने के सामान जुटाते रहें, और चीखते चिल्लाते जिन्दगी की गाड़ी को ढकेलते रहें ? पर कौन सोचे इन प्रश्नों को ?

आज की शिक्षा, दीक्षा और वातावरण केवल लौकिक साधनों द्वारा अधिकाधिक आराम उठाने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है। उसकी प्रेरणा है शरीर को सजाओ, उसी को तृप्त करो ! इसी में आनन्द है, यही लक्ष्य है, और यही है उत्कर्ष की पराकाष्ठा ! सारा विज्ञान, ज्ञान, और बल आज अधिकार प्राप्ति, संरक्षण, और दूसरों को कुचलने में तत्पर है, और यह ही फैलते हुए गुंडेपन का आधार है।

हम पूछना चाहते हैं कि क्या शांत हरे भरे देशों को श्मशान बनाने वाले व्यक्तियों को मनुष्य कहा जा सकता

मानवता के खण्डहर बनाने को उत्सुक दानवता का प्रतिनिधि गुण्डापन आज अट्टहास करता हुआ आगे-आगे बढ़ता चला जा रहा है। उसका बढ़ना विश्व के समस्त शान्तिप्रिय वर्ग के लिए जलता हुआ संकट का संदेश है। प्रस्तुतः लेख में इसी संकट से छुटकारा पाने के लिए कटिबद्ध व संगठित हो इसके उन्मूलन की तैयारी करने का आमन्त्रण दिया गया है। देखें कौन इसे स्वीकार करता है ? —

संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है ? अणु बम, और उद्रजन बम जैसे विनाशकारी प्रयोगों के कर्णधार क्या किसी प्राचीन काल के राक्षस से कम हैं ? क्या भूखे भेड़िए की तरह कभी मजहब के नाम पर, कभी अधिकार के नाम पर, कभी रोटी के नाम पर लाखों का रक्त बहाने वालों में मानवता का कोई अवशेष कहीं पर भी शेष है ? और उत्तर में कहना होगा कि नहीं ।

इस "नहीं" को "हां" में बदलने का प्रयास आज कौन करे ? कौन बताए, पुकार पुकार कर मानव को कि उसका जन्म धरती के विनाश, चीत्कार रुदन क्रंदन की लपटों में झुलसने के लिए नहीं, अपितु शान्त, सुखी और आनन्दित हो, स्वर्ग समान पुण्यमयी धरती पर निवास कर, परम पिता परमात्मा की गोदी में स्थान पा कर लक्ष्य सिद्धि के लिए हुआ था ! कौन समझाए उसे कि आज जो उसने केवल लौकिक साधनों की प्राप्ति ही को जीवन लक्ष्य समझकर दौड़ लगानी आरम्भ की हुयी है, वही अन्धकार की ओर फेंकने वाली है। संसार की समस्त वस्तुएं 'साध्य' बनकर हमें पथ भ्रष्ट कर चुकी हैं। पथ भटककर आज तक न किसी को शांति मिली है और न मिल सकती है। पर कौन समझे और कौन समझाए ?

जो भी हो, प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ते हुए, फैलते हुए, इस गुंडेपन को रोकना, शांति, न्याय और सत्य के प्रसारकों का प्रथम कर्तव्य है, साथ ही उत्तरदायित्व भी ! जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में आज कीचड़ भर चुका है। इस कीचड़ को निकाले बिना न हम चल सकेंगे, न कुछ कर सकेंगे, बस फिसलते रहेंगे, गिरते, डगमगाते रहेंगे ? अन्त क्या होगा, यह भी कौन जाने ?

किन्तु नहीं, हमने निश्चय करना है, इस गुंडेपन को समाप्त करने का ! प्राणों की समिधा के बल से वह ज्योति प्रज्वलित करनी है जिसमें यह पाप ताप संताप धू-धू कर जल उठें ! अनाचार, हाहाकार अनैतिक व्यापार छलना-मयी चालें सदा के लिए स्वाहा हो जाएं, और तब हो एक नए स्वर्णिम युग का निर्माण !

आर्यसमाज ऐसे युग निर्माण के लिए प्रतिज्ञा बद्ध है। उसका लक्ष्य है, दानवता, गुंडापन और राक्षसी लहरों का उन्मूलन ! वह किसी भी मूल्य पर इनमें से किसी के साथ भी कोई समझौता नहीं कर सकता। प्रभु पर विश्वास रख, सत्य ज्ञान के सहारे वह बढ़ता जाएगा, मार्ग के तूफान, चट्टानें और पर्वत उस के मार्ग में रोडा नहीं बन सकते ! 'वह सभी को ठोकरों से ठुकराता आगे आगे बढ़ता जाएगा ही, उसे विजय मिलेगी ही .....

पर जो यह समझ रहे हों, हम से सहमत हों, कि संसार में गुंडापन बढ़ रहा है उन्हें हमारा आमंत्रण है कि वे आएं और आर्यसमाज के साथ कंधे से कंधा मिला कर बढ़ते हुए महानाश के अंधड़ को रोकने की तैयारी करें ! सर्वग्रामी प्रलय से कोई न बचेगा, यह निश्चित है, इस प्रलय को रोकने में सहयोग दीजिए ! तभी कुछ संभव है और सम्भव है। स्वर्णिम प्रभात ! जिसकी बाट सभी उत्सुकता से देख रहे हैं। 'प्रतीक्षा का अन्त,होने की कल्पना क्या आपको प्रेरणा न देगी ? यह प्रश्न है जिसका उत्तर सभी को देना होगा।

जाल बिछा दो !

शताब्दी वर्ष जाते हुए हम से कह रहा है कि चारों ओर आर्यसमाज की विचारधारा का जाल बिछा दो। पापों का जंगल जलाओ ! हरयाली फैलाओ ताकि धरती स्वर्ग बन जाए।

भाषण कम, काम अधिक, घोषणाएं बाद में, काम पहले और कर्त्तव्य जीवन अधिकार मृत्यु समझकर आगे बढ़ो !

अगर आप अपने को बदल नहीं सकते तो जीवित नहीं रह सकते। यदि गुरुदेव दयानन्द की बात नहीं मान सकते तो उनकी जय कैसे करोगे ?

पाखंड—अन्धविश्वास, ढोंग—झूठ और पापों की चुनौती यदि स्वीकार नहीं करोगे, तो कौन करेगा ? अगर वेद भक्त जन ही धर्म का प्रसार नहीं करेंगे तो 'वेद' धर्म कैसे फैलेगा ?

सोचो और निश्चय करो ! आज या फिर कभी नहीं। कमर कस कर संसार को स्वर्ग बनाने के लिए कर्म क्षेत्र में आओ !

अपने को बदलो !

आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि हम अपने को बदलें। आत्म निरीक्षण करे और यदि हमें अपने में कोई त्रुटि दिखायी द तो पहले अपना सुधार करें।

अपना सुधार-अपने परिवार का सुधार ही विश्व निर्माण का आधार है। जिसने अपने को, अपने घर को ठीक नहीं किया वह औरों को क्या ठीक करेगा ?

'धर्म' पर चलने का उपदेश देना जितना सरल है उतना ही कठिन है उस पर आचरण। पर यह भी ध्रुव सत्य है कि बिना इसके हम कुछ कर भी नहीं सकते।

क्या आप अपने सुधार के लिए तैयार हैं ?

—भारतेन्द्र नाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ

आर्य साहित्यकारों की सतत साधना

सम्भवतः बहुत से पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि गुरुमुखी लिपि, पंजाबी बोली में अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम अनुवादक एक राजस्थानी आर्य विद्वान था। वह थे श्रीमान मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी। भले ही तब वह अमृतसर में रहते थे परन्तु मूलतः वह राजस्थानी ही थे। उर्दू, फारसी, हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत के उस विद्वान् मनीषी का ऋण आर्यसमाज कैसे चुका सकेगा ? ७०० पृष्ठों का यह ग्रंथ पंजाबी में अनुदित करके छपवा देना, कितनी बड़ी साधना और लग्न का चमत्कार है।

पाठकों को यह भी सम्भवतः ज्ञात नहीं होगा कि सत्यार्थप्रकाश का मराठी अनुवाद एक पंजाबी मनीषी ने किया था। वह थे स्वर्गीय डा० बालकृष्ण जी कोल्हापुर वाले। इस कार्य में स्वर्गीय आर्योपदेशक ओघले जी की सहायता उन्होंने प्राप्त की थी, परन्तु स्वयं बहुत परिश्रम किया था।

आर्यजन ! आपको विदित होना चाहिए कि इस ग्रंथ रत्न का अंग्रेजी अनुवाद महान् दार्शनिक उपाध्याय जी ने केवल पाच छः मास में किया था और वह भी तब जब वह उत्तर प्रदेश सभा के प्रधान थे। गाड़ियों में समाजों की यात्रा करते हुए साथ-साथ यह कार्य भी कर दिया। धन्य थे वे लग्न के पुतले ! खाट पर पड़े-पड़े अपने अन्तिम दिनों में पूज्य उपाध्याय जी ने कई ग्रंथ रत्नों को लिख दिया। ये ग्रंथ उपन्यास नहीं, दार्शनिक हैं। यह नहीं भूलना चाहिए।

पाठकों को ज्ञात होना चाहिए कि 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में जब आर्यसमाज के लौह पुरुष स्वामी श्री स्वतन्त्रानन्द जी पर सेना में विद्रोह फैलाने और पंजाब के गवर्नर का वध करने का षड्यंत्र करने के आरोप लगे तो उन्हें बन्दी बनाकर अमानवीय यातनाएं दी गयीं। किले से छोड़े गये तो वर्षों महाराज को स्थानबद्ध रखा गया। उन्हीं दिनों केवल पांच मास में अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश का पंजाबी भाषा में अनुवाद कर दिया और पाद टिप्पणियां भी दे दीं।

उन्हीं दिनों केवल ४६ दिन में महाराज ने एक बड़ा अद्भुत शोध ग्रंथ हिन्दी व पंजाबी में तैयार कर दिया। यह ग्रंथ आर्य सिद्धान्त व सिख गुरु' विद्वानों में बड़ा सम्मानित हुआ था।

वेद विद् स्वामी वेदानन्द तीर्थ ने श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी की प्रार्थना पर कुछ ही दिन में 'स्वाध्याय सन्दोह' के रूप में एक उच्च कोटि के बृहद ग्रंथ की रचना कर दी थी। झुलसा देने वाली गर्मी के दिनों में यह ग्रंथ ऐसे कमरे में तैयार किया गया जहाँ बिजली के पंखे की भी सुविधा नहीं थी।

महात्मा दर्शनानन्द जी ने अपने कई स्थायी महत्व के ट्रैक्ट उत्सवों पर प्रचारार्थ घूमते-फिरते तैयार कर दिये।

वीर लेखराम की तो गति मति ही न्यारी थी। उस का तो नाम ही माता ने लेखराम रखा था। सुनामी श्री लेखराम ने कैसे सहस्रों पृष्ठ लिख दिये और वह भी शोध कार्य ! यह बड़े आश्चर्य की बात है।

पं० भगवद्दत्त जी यात्रा में भी जब गाड़ी में अपना स्थान सुरक्षित करवा कर रात्रि को सोते थे तो सिर के नीचे कागज कापी व पैन की व्यवस्था करके सोते थे। किस लिए ? ताकि स्वप्न में भी कोई विचार सूझे तो स्वप्न टूटने पर एकदम उठकर नोट कर लिया करते थे। क्या पता आलस्य कर देने पर फिर वह विचार बिसर जावे। यह बात १९५३ ई० में स्वयं पं० जी ने हमें सुनाई थी।

आर्यजन ! साहित्य साधना भी एक तप है। स्वाध्याय को शास्त्रों ने परम तप माना है। अपने साहित्यकारों की सतत साधना को समझो और ऋषि ऋण चुकाओ।

१९७६ का आकर्षक कैलेंडर

(तीसरा संस्करण)

६ रंगों में छपा बड़े साइज का कैलेंडर

तैयार है : ५० रु० सैकड़ा

इस वर्ष में तीसरी बार छपा है।

अपना आदेश तुरन्त भेजें

दयानन्द संस्थान

नई दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रचार के लिए ट्रैक्ट

केवल १०० रु० हजार

१. आर्यसमाज क्या मानता है ? श्री मदनमोहन विद्यासागर
२. महर्षि दयानन्द की विशेषताएं : महात्मा नारायण स्वामी
३. आर्यसमाज की मान्यताएं : पं० रामचन्द्र देहलवी
४. विश्व को वेद का सन्देश—भारतेन्द्रनाथ
५. आर्य समाज के दस नियम (व्याख्या सहित)
६. निमंत्रण आर्यसमाज का : स्व० पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय
७. आर्यसमाज के १०० वर्ष : पं० भारतेन्द्रनाथ

(आर्यसमाज ने १०० वर्ष के कालखण्ड में विभिन्न क्षेत्रों में क्या योगदान दिया है, इसका प्रेरक विवरण पढ़िए इस ट्रैक्ट में जो अब तक लाखों की संख्या में छप चुका है।)

८. सुख का मार्ग : पं० भारतेन्द्रनाथ
९. आर्य कौन ? पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार
१०. स्वास्थ्य का महान शत्रु अण्डा : स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
११. साम्यवाद—समाजवाद क्यों नहीं ? महात्मा नारायण स्वामी
१२. स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश —महर्षि दयानन्द
१३. मूर्ति पूजा से हानियां —महर्षि दयानन्द
१४. आर्योद्देश्य रत्नमाला—महर्षि दयानन्द
१५. वैदिक—संध्या

ये सभी ट्रैक्ट १०० रु० हजार। १५ रु० सैकड़ा दिए जाएंगे। कोई भी ट्रैक्ट १००० से कम हजार के रेट में नहीं भेजेंगे।

१९७६ के लिए आकर्षक डायरी

वैदिक—दैनन्दिनी (डायरी)

[दूसरा संस्करण]

मूल्य

अजिल्द ५) =३०० रु० सैकड़ा
सजिल्द ६) =४०० रु० सैकड़ा

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-५

आर्यसमाज शताब्दी के उपलक्ष्य में

सत्यार्थ-प्रकाश

(लागत से अत्यन्त कम मूल्य पर मंगाएं)

१. प्रचार संस्करण — बड़ा साइज २००) सैंकड़ा
२. राज संस्करण —बढ़िया कागज सजिल्द ३५०) सैंकड़ा
३. उपहार संस्करण सर्वश्रेष्ठ कागज पर बढ़िया कपड़े की जिल्द : ४५०) सैंकड़ा
४. शताब्दी संस्करण १० × १५ इंच साइज बढ़िया कपड़े की जिल्द ५१)
५. शताब्दी उपहार सबसे बढ़िया आर्ट पेपर अनुपम पर १०० वर्ष में प्रथम बार छपा १०१)

इन रेटों पर कोई संस्था यह ग्रंथ नहीं दे सकती

नई.....नई.....बिल्कुल नयी

सशक्त भाव भरी श्रद्धापूर्ण भाषायुक्त

महर्षि दयानन्द की जीवनी

१६ चित्र : पृष्ठ २१२
तिरंगा बढ़िया कवर : १००) सैंकड़ा

शीघ्रता कीजिए :

भारी संख्या में मंगाकर बांटें

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—श्री पूर्णचन्द एडवोकेट
भू. पू. प्रधान सार्वदेशिक सभा

फैशन का भूत— महंगाई और लूट

आज कल खबरें समाचार पत्रों में छप रही है कि लाखों और करोड़ों रुपये का माल जैसे कपड़े, घड़ियां आदि विदेशों से छिपकर चोरी से भारत में बेचने के लिए लाये जा रहे हैं। भारत सरकार ने विदेशों से अनेक प्रकार का माल मंगवाना इस उद्देश्य से रोका कि जिससे भारत में स्वदेशी सामान के उत्पादन में वृद्धि हो और उनकी मांग बढ़े। यदि भारतवासियों में स्वदेशी का प्रेम उतना ही होता जितना महात्मा गांधी चाहते थे या महर्षि दयानन्द जिसका प्रचार चाहते थे। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। फैशन दूषित स्वभाव का नाम है या दूषित इच्छाओं का। कोष में Dearness एक शब्द ऐसा है जिसके दो अर्थ है। अर्थात् Lovely और Coslly अर्थात पसन्द में प्रिय मूल्य में विशेष। अनुभव से ये दिखाई देता है कि जब तक भारत वासियों का स्वभाव मर्यादित न होगा और उनके अन्दर विदेशी माल लेने की इच्छा बनी रहेगी चोर बाजारी और तस्करी अर्थात् छिप के माल लाने की कुप्रथा बनी रहेगी। छिप के माल लाने को रोकने के लिए बड़े कड़े कानून बनाये गये हैं और ये आवश्यक भी है परन्तु जो अनुचित लाभ की सम्भावना है। वह ऐसे दूषित अपराधों के रोकने में जरूर बाधक रहेगी। स्वभाव की मर्यादा के लिए नैतिक स्तर पर खूब प्रचार होना चाहिए। केवल विदेशी माल के सम्बन्ध में ही ये बात नहीं है कि फैशन का भूत अनेक नागरिकों पर सवार हो। अनेक जीवन के क्षेत्र और कार्य ऐसे हैं जहां ये भूत प्रचलित हैं। जैसे सिर के बाल रखना। जब अंग्रेजों का राज्य आया अंग्रेजी बाल रखने की प्रथा चली। और अनेक नागरिक इसके चक्कर में आ गये।

सर जान वुदरोफ कलकत्ता हाईकोर्ट के एक प्रसिद्ध जज थे। उन्होंने भारत शक्ति नाम की एक पुस्तक अंग्रेजी में प्रकाशित की। उसमें अंग्रेजी बालों की नकल के सम्बन्ध में ये लिखा 'When I see an Indian youth with English hair on his head. Ten Annas in front and six Annas in behind.' "अर्थात् जब मैं एक भारत के नवयुवक को अंग्रेजी बालों की नकल करते हुए देखता हूँ मैं लज्जित प्रतीत होता हूँ।" अब तो कई वर्षों से हिप्पी नाम का एक जन्तु भारत के अनेक स्थानों में दिखाई देता है। बड़े-बड़े बाल नीची कलमें रक्खे हुए नवयुवक और नवयुवतियां घूमते हुए नजर आते हैं। इस प्रकार के बाल रखना चरित्र दोष या गुण्डा गर्दी का भी प्रतीक माना जाने लगा है।

खान पान में भी फैशन का बड़ा चक्कर है। चौका और छूत-छात खत्म हुई ये तो अच्छा हुआ, परन्तु खाने के क्षेत्र में दूषित स्वभाव का ये परिणाम हुआ है कि अण्डे और मुर्गी खाने की सामग्री में साधारणतया माने जाने लगे। बहुत वर्ष हुए देहली में एक कृषि प्रदर्शनी हुई थी। मैं उन दिनों सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान था और देहली में ही बहुधा रहना पड़ता था। उस कृषि प्रदर्शनी में एक विभाग ऐसा था जिसमें मुर्गी अण्डा और मछलियों का प्रदर्शन था। मैंने सार्वदेशिक सभा की ओर से एक नोटिस भी छपवाया था और माननीय प्रधानमंत्री जी से अनुरोध किया था कि वे यह विचार करें कि ये मुर्गी आदि कृषि में कैसे सम्मलित मानी जा सकती हैं? खाने में भी जो फैशन चले हैं वे भी बहुधा स्वास्थ्य के लिए हानि-कारक हैं—खाने में स्वाद और स्वास्थ्य दोनों पर दृष्टि रखना आवश्यक है। यदि स्वाद पर ही दृष्टि रही और स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं रहा तो परिणाम बड़ा अहित् कर हो सकता है। खानपान के साथ शराब का भी फैशन सा हो गया है, ये भी निन्दनीय है। कई हजार वर्ष हुए रोमन इम्पायर अर्थात रोमन साम्राज्य सारे यूरोप और कुछ एशिया के हिस्सों में भी प्रचलित था। उस रोमन साम्राज्य के पतन का इतिहास एक गिब्बन नाम के लेखक ने लिखा है। उसने लिखा है कि Gluttony was the cause of the down full of the Roman Empire. अर्थात् खाने की कुप्रथा से रोमन साम्राज्य का नाश हुआ। उसने लिखा है कि रोमन साम्राज्य के प्रतिष्ठित सज्जन खाने के अधर्मी थे वो मोर को मार कर केवल उसकी जबान खाने के शौकीन थे। बहुत से मोरों की जान लेकर उनकी जबान निकालकर पका कर खाते थे और जब खाते-खाते पेट बहुत भर जाता था तो किसी तरकीब से उल्टी या कै करके फिर खाने लगते थे। इस भयंकर कुप्रथा का परिणाम हुआ कि साम्राज्य का नाश हो गया। ऐसे खाने की कुप्रथा के साथ कुछ और भी कुप्रथा का प्रचलन हो गया था ऐसे अनेक उदाहरण और हैं—जिनके सम्बन्ध में फैशन के भूत पर विचार हो सकता है। आज कल अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष चल रहा है। स्त्री और पुरुषों के परस्पर मिलने और साथ काम करने, उठने बैठने पर भी विचार होना है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश और संस्कार विधि में अनेक स्थानों पर इस बात पर बल दिया है कि स्त्री और पुरुष इस प्रकार जीवन निर्वाह करें

(शेष पृष्ठ १५ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज के उपदेशक, संन्यासी, भजनोपदेशक, पुरोहित, विद्वान्, लेखक, कवि, पत्रकार, कार्यकर्ता, समाजों व सभाओं के अधिकारी कार्यकर्ता कृपया यह फार्म भरकर शीघ्र से शीघ्र भेजें। साथ में अपना पासपोर्ट साइज का चित्र चिकने कागज पर भेजें। —सम्पादक

आर्यसमाज के आधार स्तंभ

नामक ग्रंथ छप रहा है।

यह विशाल ग्रंथ शीघ्र

छप रहा है। मूल्य होगा ३१ रु०

किन्तु अभी १५ मार्च तक

केवल २२ रु०

★

संलग्न विवरण लिखकर

आज ही भेजिए।

●

अधिक से अधिक

व्यक्तियों तक यह

संदेश पहुंचाएं

●

शीघ्र ही चित्र-विवरण और आदेश भेजें

पता : दयानन्द संस्थान
१५९७, हरध्यानसिंह रोड
नई दिल्ली-११०००५

यह विवरण शीघ्र भेजें

विवरण पत्र

१. नाम

२. पिता का नाम

३. माता का नाम

४. जन्मतिथि

५. जन्म स्थान

६. आरंभिक शिक्षा

७. शिक्षा का पूर्ण विवरण

८. आर्यसमाज में कार्य करने की प्रेरणा कैसे मिली ?

९. क्या क्या प्रमुख कार्य किया ?

१०. किन-किन पदों पर रहे ?

११. ग्रन्थों/कार्यों/पद आदि का प्रमुख परिचय

१२. आर्यसमाज आपको क्यों पसन्द है ?

१३. विशेष ज्ञातव्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कम खाइए रोगों को भगाइए

★ ★ ★

यों तो चिकित्सा की अनेक पद्धतियां है। किन्तु एक ऐसी भी पद्धति है कि जिसमें आपको उपचार पर अधिक व्यय की आवश्यकता नहीं पड़ती। यह है प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति।

इस चिकित्सा पद्धति का आधार है अल्पाहार। अर्थात् मनुष्य कम व सुपाच्य भोजन करे। क्योंकि पाचक, हल्का एवम् कम मात्रा में प्रयोग किया गया भोजन स्वयंमेव रोग मुक्ति का बहुत बड़ा साधन है। दीर्घ जीवन का रहस्य भी कम तथा आवश्यकता पर भोजन करने में निहित है।

प्राकृतिक उपचार में जीवन परिवर्तन की बात भी आती है। जो प्राकृतिक उपचार करता है वह अपने शरीर में से विष निकाल कर यह प्रयास करता है कि पुनः बीमार न पड़े।

कहा भी गया है कि मनुष्य का भौतिक शरीर पंच तत्वों से बना है—ये हैं वायु, जल, पृथ्वी, तेज और आकाश। आत्मा उन्हें गति देती है। प्राकृतिक चिकित्सा का विज्ञान रोगों के निदान में इन्हीं पांच तत्वों पर आधारित है, जिनसे मानव शरीर बना है।

इस चिकित्सा का एक प्रमुख आधार यह है कि स्वास्थ्य के प्रति व्यक्ति सदैव सतर्क रहे। और इसका आधार है खान पान में संयम। क्योंकि रोगों का एक मूल कारण है जीभ अर्थात् स्वाद। क्योंकि गांधी जी के शब्दों में जीभ को जीत लेना, सब वस्तुओं पर विजय पा लेने के तुल्य है।

उसका एक अन्य आधार है उपवास। क्योंकि हृदय की शुद्धता के साथ ही शारीरिक शुद्धता भी आवश्यक है और उसमें उपवास बड़ी सीमा तक सहायक सिद्ध होता है।

भोजन जहाँ हल्का हो वहाँ संतरे आदि का रस भी अनेक रोगों को दूर करता है।

कटि स्नान, विजातीय द्रव्य निकालने वाला साधारण भोजन-दूध, मट्ठा, फल और फलों का रस तथा प्रचुर मात्रा में स्वच्छ एवम् ताजा पानी पीना भी स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है।

प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति में मिट्टी का प्रयोग सूर्य स्नान, वायु स्नान आदि भी महत्वपूर्ण है ठंडी और गरम मिट्टी की पट्टियां, सूर्य स्नान एवम् वायु स्नान आदि भी कई रोगों की मुक्ति में सहायक सिद्ध होते हैं। ●

हंसिए नहीं

रात का समय था। सब जगह अंधेरा छाया हुआ था। इतने में श्याम उठा और बैटरी जला कर चारों तरफ देखकर सो गया। कुछ समय बीता श्याम के पिता ने श्याम से पूछा :—

अरे श्याम, तू अभी इधर-उधर क्या देख रहा था ?

श्याम—नहीं पिताजी। मैं तो बैटरी जला कर देख रहा था कि कहीं घर में बत्ती तो नहीं जल रही।

× × ×

अध्यापिका—अंग्रेजी राज्य की नींव डालने वाला कौन था ?

शीला—अंग्रज।

× × ×

सुबह-सुबह घर के बाहर आवाज आती है—फलवाला—

सोहन—अरे ओ फलवाले, एक फलवाला कितने का आता है ?

फलवाला—तू फलवाले को लेकर क्या करेगा ?

सोहन—अगर मैं फलवाला ही खरीद लूंगा तो रोज खूब फल मुफ्त में ही मिला करेंगे।

(पृष्ठ ९ का शेष)

कि उनका एकान्त में सम्पर्क कम से कम हो उन्होंने सह शिक्षा का बड़ा विरोध किया है। इस पर पृथक लेख की आवश्यकता है, फिर लिखूंगा। स्वभाव की मर्यादा पर सबको जीवन के हर क्षेत्र में ध्यान रखना चाहिए।

आर्यसमाज के सम्बन्ध में भी ये विचारणीय है कि ये भी अब कुछ वर्षों से एक ऐसे वातावरण में आ गया है कि केवल इसको रविवार संस्करण कह सकते हैं। थोड़े से सदस्य सत्संग में जमा हो जाते हैं और कुछ समय बैठकर और सुनकर या कहकर चले जाते हैं। यदि किसी आर्यसमाजी से पूछा जाय कि आप आर्यसमाज के सत्संग में क्यों जाते हैं ? तो कहेगा कि संसार के उपकार के लिए। प्रश्न यह है कि पहले आर्य बनना है फिर दूसरों को आर्य बनाने में सफलता हो सकती है। आर्यसमाज का बड़ा भवन सदाचार पर केन्द्रित है। परन्तु वर्तमान हलचल में निर्वाचन में विजय का भूत सवार है और जो असली काम है अर्थात आध्यात्मिक उन्नति उस पर ध्यान कम है। ●

आर्यसमाज को रविवार संस्करण बनने से रोका जाए। ★★★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—दिग्दर्शनानन्द

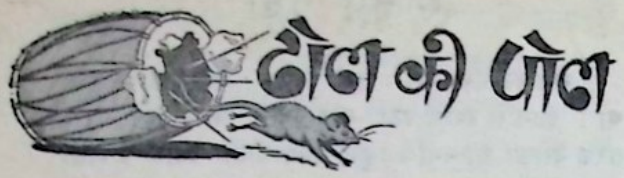

"कहाँ से आ रहे हैं सदानन्दजी ! आपके चेहरे पर कुछ मुस्कान तो है पर थोड़े थोड़े से परेशान भी लगते हैं आप ! क्या घटना घटी है। बताइए न साफ साफ ।" जिज्ञासानन्द ठहरे जिज्ञासु, अतएव अपने अभिन्न के समक्ष अपनी जिज्ञासा का पिटारा खोल दिया, जो कुछ उत्कंठा थी, उसे वाणी से बोल दिया।

सदानन्द जी बोले "मित्रवर कुरेदो न मेरे दिल के फफोले। आज कल बड़ा ही उदास है। बात कुछ अजीब सी है। न कहे जनता है और न चुप रहे बनता है।

अरे बन्धु कुछ तो बताइये। कहा जाता है कि गम भी कहने से बंट जाता है, और फिर आपका और मेरा तो पावन नाता है। मुझसे भी भला क्या है छिपाना। आपको कुछ तो चाहिये मुझे बताना।"

जिज्ञासानन्द जी आप जिद ही कर रहे हैं तो बताए देता हूं। जो हमपे गुजरी है सुनाए देता हूँ। मैं तो अपने आपको ही मानता था अकल का धनी। उसी अकल और तिकड़म के सहारे रही थी अपनी चेयर महामण्डलेश्वरों की मंडली में बनी। किन्तु अब मेरे ही ग्राम के एक अन-पढ़ ने मेरे कान काट लिये। मुझे ही क्या मेरे पूरे ग्राम को चूना लगा दिया किस्सा है जरा लम्बा, अतः सुनिए न पकड़ कर यह बिजली का खम्भा। तनिक बैठ जाइए।

और जिज्ञासानन्द भी आराम से मैदान में बैठ गए। फिर चल पड़ा चलता चलाता सिलसिला और बताने लगे सदानन्द। "बात यों हुई कि मेरे ग्राम में है एक अखाड़िया पहलवान। सभी उसे समझते थे कि यह है अनपढ़ और बुद्धि का हिमदान। बड़े दिनों के बाद उसके यहां हुई एक सन्तान। सभी ग्राम वालों ने दी उसे बधाई और फिर दावत देने की भी गुहार लगाई। नाम तो कुछ भी हो किन्तु सभी उसे मजनूं बुलाते हैं। उसी नाम से ये हजरत जाने जाते हैं। बात बढ़ते बढ़ते ग्राम के प्रधान तक जा पहुँची। नम्बरदार जी भी उसके घर बधाई देने आए। उन्होंने भी कहा कि भाई मदनू। एक दावत तो नम्बरदार की हो जाए। पहले तो वह रुकता गया। अन्ततः सन्तान के नामकरण का दिन नजदीक आता गया और यह ओमू भी अपनी योजनाएं बनाता गया। उन्हीं दिनों हम भी ग्राम में जा पहुँचे। हमारे पिता जी भी हैं ग्राम के एक बड़े बुजुर्ग। हम अपने साथ अपनी पिछले दिनों किए गए परिश्रम की पुण्याई के प्रतिदान स्वरूप १० थाल और २० कटोरे एवं २० चम्मचें ले गए थे। ओमू ने पहले तो नम्बरदारजी से ग्राम के पंचायती कढ़ाव लिये और ले लिये पतीले। बताया कि नामकरण पर दावत दूँगा। फिर वह पहुंचा प्रधान जी के पास उनके यहाँ से भी ले ली तवा परात और फिर जो चमत्कार दिखाया। उसका नहीं है जवाब। उसने कर दिखाया कमाल। तभी से हम हुए हैं हाल बेहाल।"

अरे भाई सदानन्द "वह कमाल तो बताओ। हमारी जिज्ञासा को बात को लम्बा न बनाओ। तनिक शार्ट फार्म में ही हमें समझाओ।" जिज्ञासानन्द ने बीच में ही टोक दिया।

सदानन्द जी पुनः बोलते गए 'तो जी वह कमाल यह कि मजनूं ने दावत के नाम पर इकट्ठे किए बर्तनों के साथ साथ हमारे घर से भी वह सभी थाल, कटोरे, चमचा, चम्मच ले गए उन्होंने इन्हें जाकर पास के शहर में बिक्री का माल बनाया और दस का माल पांच के भाव ठिकाने लगाया। वह वहां से किराए पर कुछ बर्तन-भांडे ले आया। कुछ गांव वालों से भी अन्न पानी उधार-सुधार जुटाया। और फिर नामकरण संस्कार पर एक विशाल भोज में सारे ग्राम के नर-नारियों को बुलाया। उसके घर के बाहर आंगन में पंक्तियों में लोग बैठे। डट कर छककर भोजन कराया। मदनू ने हाथ में एक बड़ा भारी पंखा लिया, पंखा झलता रहा और साथ ही साथ एक मंत्र सा भी उच्चारता रहा। पहले तो मैं ठीक से समझ नहीं पाया कि यह कह क्या रहा है। फिर मैंने वहाँ ध्यान लगाया तो उसके इन शब्दों को सुन पाया।" खाओ-पिओ अपना अपना, मजनूं का पंखा ही पंखा।"

"भाई क्या था उसके इस वाक्य का अर्थ यह भी कुछ आपकी समझ में आया या फिर उसने ही यों बताया—कुछ तो बताइए। सदानन्द जी तनिक हमें समझाइए।" जिज्ञासानन्द ने पुनः बीच में ही टोका।

सदानन्द ने अपने विवरण का सिलसिला आगे बढ़ाया और फरमाया। "सभी ने सहभोज किया। मजनूँ को साधु-वाद दिया। जी भर कर उसके द्वारा तैयार कराए गए स्वादिष्ट भोजन की जी भर कर प्रशंसा की। वे सभी खा-पीकर अपने अपने घरों को पधारे। कई दिन बीत गए तो प्रधान, नम्बरदार और हम सरीखे गम खाकर सभी पहुंचे सभी ने उससे कहा—भइया अब तो बर्तन भाण्डे कर दो वापस। तुम्हारा भोज निपट गया। संतान का नामकरण संस्कार भी हुए कई दिन बीत गए। अब तो तुम्हें उनकी नहीं रही है जरूरत—क्या अभी नहीं मिली है बर्तन, चादर, पट्टे, थाली, लोटे आदि ग्राम वालों को लौटाने की फुर्सत।

"वह सुनते ही बोला—उसने अपना मुखड़ा खोला

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या आप ३०१) दे सकते हैं ?

यदि हाँ तो....

शिवरात्रि के पवित्र दिन ३०१) भेजकर
जन-ज्ञान (साप्ताहिक) के
आजीवन सदस्य बनिए

हमने प्रभु भक्तों के भरोसे जो भारी बोझ उठाया है, हमें विश्वास है कि आप उसे बांटेंगे ?

अब तो आप ही के हाथ में है कि—जन-ज्ञान साप्ताहिक क्या रूप धारण करे

आपके सहयोग की प्रतीक्षा रहेगी

संपादक—जन-ज्ञान (साप्ताहिक)

वेद मंदिर, नई दिल्ली-११०००५

२७-२८-२९ फरवरी को काशी में विशाल शताब्दी समारोह

राष्ट्र को धर्म का सच्चा संदेश एक बार काशी देगी

नयी दिल्ली ! काशी में आर्यसमाज शताब्दी के प्रमुख आयोजक पं० प्रकाशवीर शास्त्री ने आर्य समाजों, संस्थाओं व जनता का आव्हान करते हुए आग्रह किया है कि सभी भारी संख्या में २७ फरवरी की प्रातः काशी पहुँचें।

उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में मेरठ और कानपुर के दो समारोह सफलता पूर्वक संपन्न हो चुके हैं। अब यह तीसरा समारोह उस स्थान में हो रहा है जहां से हजारों वर्षों से संसार में ज्ञान का आलोक फैला है।

ज्ञान का प्रसार हमारा लक्ष्य है। इसलिए आर्यों को अपनी विशाल शक्ति का प्रदर्शन करते हुए काशी पहुंचने का निर्णय करना चाहिए।

आप ने कहा कि—

हम सभी अतिथियों के भोजन का, निवास का प्रबंध समारोह की ओर से कर रहे हैं। इच्छा है कि यह आयोजन अपने ढंग का अनूठा हो और पाखंड—अज्ञान के प्रतीक, हमारे प्रदर्शन से प्रकाश ग्रहण करें।

अतः सारे कार्य छोड़कर भी काशी आइए और वहां एक बार फिर वैदिक धर्म की ध्वजा सबल हाथों से फहराइए।

आर्यसमाज का भावी कार्यक्रम क्या हो ?

महोदय,

यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि आप जन-ज्ञान का साप्ताहिक संस्करण भी निकालने जा रहे हैं। जन-ज्ञान (हिन्दी व अंग्रेजी) द्वारा निश्चय ही दयानन्द मिशन की महती सेवा होती है। मैं आपको इस पुण्य संकल्प के लिये हार्दिक बधाई देता हूं।

अब जन्म शताब्दी के उपरान्त आर्यसमाज को निम्न ५. कामों पर विशेष बल लगाना चाहिये :—

१. आर्यसमाजिकों का आर्यकरण अर्थात् आत्म शुद्धि।

२. आदिवासी, पिछड़ी जातियों तथा हरिजनों को आर्य-समाज के निकट लाना अर्थात् उनको मानवता का दिव्य सन्देश देना।

३. वेद और उपनिषदों का मानवतावाद के प्रकाश में सरल भाषा में प्रकाश और भिन्न-भिन्न भाषाओं में उलथा कर जन-साधारण तक पहुंचाना।

४. भारत के जिन भागों में अभी तक आर्यसमाज के पांव नहीं पहुंचे हैं या नहीं जमे हैं वहां विशेष प्रचार योजनाएं लेकर जाना।

५. एशिया, अफ्रीका, यूरोप, अमेरिका आदि के विभिन्न क्षेत्रों में वैदिक-मिशन की स्थापना करना।

—शिवदयालु, मेरठ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संस्थान समाचार

वेद भाष्य पूर्ण हुआ

★★★

प्रभु कृपा और वेद भक्तों के सहयोग से वेद भाष्य पूर्ण हुआ। बिना किसी साधन के आरम्भ किया यह यज्ञ परमात्मा के आशीर्वाद बिना पूर्ण नहीं हो सकता था। हमने सदा यह अनुभव किया कि स्वयं प्रभु ही सारे कार्य सम्पन्न कर रहे हैं।

यज्ञारंभ के समय किसे आशा थी, कि कार्य पूरा होगा। विघ्न बाधाएं आयीं, लगा परीक्षा हो रही है। स्वास्थ्य भी इस यज्ञ की भेंट चढ़ गया। 2 वर्ष तक अन्न त्याग ने अनेक रोगों को भी जन्म दिया, फिर भी कारवां बढ़ता गया और आज हमें हर्ष है कि हमारा संकल्प अधूरा नहीं रहा।

इससे भी बढ़कर प्रसन्नता का विषय है कि हमने आरम्भ में केवल 12,500 की संख्या में वेद भाष्य छापा था पर छपते-छपते इस का प्रकाशन 15,500 तक पहुँच गया। देश विदेश के सभी वर्णों ने प्रभु की वाणी के दर्शन कर अपने को धन्य माना। उच्चतम वर्णों ने भी 'वेद' सादर अपनाया गया।

धन्यवाद सहयोगियों का, धन्यवाद सभी का, जिन्होंने किसी भी रूप में योगदान दिया।

15 मार्च से वेदभाष्य का वितरण हम आरम्भ कर देगें। सदस्य गण वेदभाष्य कार्यालय से स्वयं जाकर या पत्र लिखकर अपनी प्रति मंगा सकते हैं। पता यह है—

पंडिता राकेश रानी मंत्री दयानन्द संस्थान, 337 ए-सूर्य्यनगर P. O. चिकम्बरपुर यू. पी. बार्डर दिल्ली-32

जाने वालों को विवेक विहार होकर या जी. टी. रोड बार्डर से जाना चाहिए। समय 9 से 5 बजे तक (शनिवार अवकाश रहेगा।)

कार्य पूर्ण हुआ, पर मंजिल अभी दूर है। जब तक संसार के प्रत्येक परिवार में वेद भाष्य नहीं पहुँचता, हमारा अभियान जारी रहेगा।

अनेक भाषाओं में वेदानुवाद की आवश्यकता है। सस्ते और आकर्षक ढंग से इसके मुद्रण की आवश्यकता है। यह सभी काम धन से पूरे होंगे। हमारे पास भावना है, साधना है, पर धन नहीं है।

यदि वेद भक्त जनता काम और नारों के भेद को समझे और श्रद्धा उदारता से योग दे तो आगे बढ़ना आसान होगा।

सभी का पुनः धन्यवाद—प्रभु हमें शक्ति दें ताकि हम देव दयानन्द का दिव्य स्वप्न पूर्ण कर सकें।

भारतेन्द्र नाथ

साप्ताहिक का भविष्य

जन-ज्ञान साप्ताहिक शताब्दी वर्ष की भेंट रूप में हमने निकाल दिया। अब उसका भविष्य आपके हाथ में है।

वह कैसा निकले, कितना छपे, उसका रूप, रंग, सज्जा कैसी हो, यह सब निर्णय हम आप पर सौंपते हैं।

हमारे पास धन नहीं है, केवल भावना है। हमारा काम आपके समक्ष है। इस काम पर विश्वास रख यदि आपके मन में भी इच्छा जागृत हो, कुछ करने की तो हमें सहयोग दीजिए।

आप निम्न प्रकार सहयोग दे सकते हैं—

१—संरक्षक सदस्य बनकर। १००१) रु० देने वाले संरक्षक-सदस्य होंगे।

२—३००१) रु० देने वाले आजीवन-सदस्य होंगे। इसके अतिरिक्त यदि प्रत्येक सदस्य कम से कम ५ सदस्य बनाकर भेज दे तो हम ६ वन्दना स्वर के पुस्तकें जिन-का मूल्य ९० रु० है रजिस्ट्री से भेज देंगे। ५ सदस्यों के लिए और १ बनाने वाले महानुभाव के लिए।

सदस्य-संख्या बढ़ाने हेतु यह उपहार हम दे रहे हैं।

शिवरात्रि पर प्रत्येक आर्य कम से कम ११ रु० वेद-प्रचार-यज्ञ हेतु अवश्य भेजें।

आगे बढ़ने में सहयोग दीजिए, ताकि दयानन्द का दिव्य स्वप्न पूरा हो सके।

—भारतेन्द्रनाथ

प्रतिदिन आकाशवाणी पर गायत्री मंत्र सुनें

प्रतिदिन मध्यान्ह २ बजे दिल्ली ग विविध भारती पर संस्थान की ओर से गायत्री मंत्र सुनिए —संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड की मंगलकामना

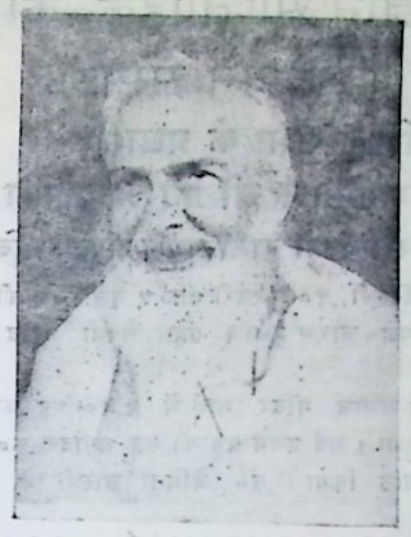

सेवा में,

श्रीमती पं० राकेशरानी जी,
सम्पादिका 'जन-ज्ञान'

श्रीमती मान्य बहिन जी ! सादर नमस्ते

आपका २९-१-७६ का कृपा पत्र ३, ४ दिन पूर्व प्राप्त हुआ। तदर्थ धन्यवाद। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 'जन-ज्ञान' का साप्ताहिक संस्करण भी आप निकालने जा रही हैं। परमेश्वर की कृपा और आप सबके पुरुषार्थ से यह भी वैदिक धर्म और आर्य संस्कृति के प्रचार में सहायक सिद्ध हो यही हार्दिक कामना है। इस बात का कृपया ध्यान रखें कि इस में किसी प्रकार की कटुता और मनोमालिन्य प्रकट न हो क्योंकि इस समय मिलकर प्रेम से काम करने की सबसे अधिक आवश्यकता है। ईर्ष्या द्वेष की समस्त भावना के त्याग की बड़ी भारी आवश्यकता है।

आर्यसमाज अब क्या करे ?

इसके उत्तर में बहुत कुछ लिखा जा सकता है किन्तु अति संक्षेप से लिखना हो तो यह लिखना आवश्यक है कि—

(१) प्रत्येक आर्य अपने व्यक्तिगत जीवनों को अधिक से अधिक वैदिक आदर्शानुकूल बनाने का प्रयत्न करें। क्योंकि आर्य की उन्नति आर्य के अपने जीवन की पवित्रता या अपवित्रता पर निर्भर है।

(२) पारिवारिक जीवनों को वैदिक आदर्शानुकूल पवित्र बनाने की अत्यधिक आवश्यकता है। इधर जितना ध्यान दिया जाना चाहिये था वह अब तक प्रायः नहीं दिया गया, जिसका परिणाम यह है कि वैदिक आर्य परिवारों की संख्या बहुत कम है। प्रायः घरों में या तो पोपलीला है जहाँ देवियाँ मूर्ति पूजा श्राद्धादि करती रहती हैं या लोपलीला है जिसमें न साधना है, न हवन, न वेदों का स्वाध्याय या संस्कारादि नियम पूर्वक और श्रद्धारूप में प्रायः नहीं किये जाते। जो विवाह संस्कारादि होते हैं उनमें भी पौराणिकता का मिश्रण हो जाता है। इन त्रुटियों को दूर करने की आवश्यकता है।

(३) कुमार-कुमारियों, युवक-युवतियों और महिला वर्ग में अति विशेष प्रचार आर्य कुमार सभाओं, आर्य महिला सभाओं के द्वारा करना आवश्यक है। उसके बिना आर्यसमाज की यथेष्ट उन्नति सम्भव नहीं।

(४) बालकों, कुमारों, कुमारियों, युवकों, युवतियों तथा सुशिक्षित वर्ग के लिये भिन्न-भिन्न स्तर और शैलियों में साहित्य का योग्य विद्वानों द्वारा निर्माण करा कर उनके प्रकाशन तथा प्रचार की ओर विशेष ध्यान दिया जाए। यह साहित्य देश की प्रान्तीय भाषाओं हिन्दी, संस्कृत के अतिरिक्त अंग्रेजी में भी सुशिक्षित वर्ग के लिये तैयार कराया जाए, जिससे वेद और भारतीय संस्कृति प्राचीन इतिहास संबंधी भ्रम दूर सकें।

(५) जाति भेद और अस्पृश्यता निवारणार्थ तथा दहेज प्रथा की मांग और प्रदर्शनादि बुराइयों को दूर करने के लिये अन्तर जातीय विवाहों को बड़ी मात्रा में प्रोत्साहित किया जाए जो गुण कर्मानुसार हों। शेष फिर

आपका मंगलाभिलाषी
धर्मदेव विद्यामार्तण्ड
ज्वालापुर (सहारनपुर)

राष्ट्रपति महोदय की मंगल कामना

प्रिय महोदय,

राष्ट्रपति जी के नाम दिनांक 30 जनवरी, 1976 का आपका पत्र प्राप्त हुआ। उन्हें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आर्य समाज शताब्दी वर्ष में 'जन-ज्ञान' साप्ताहिक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा। साप्ताहिक की सफलता के लिये वे अपनी शुभकामनायें भेजते हैं।

भवदीय,
रे० वे० राघवराव
सचिव

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान साप्ताहिक का भव्य विमोचन समारोह

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी की अध्यक्षता

प्रो० शेरसिंह जी द्वारा प्रथम अंक का विमोचन

नई दिल्ली, १० फरवरी सांय ५ बजे। यज्ञ की पवित्र वेदी पर यज्ञ आरंभ हुआ। ब्रह्मा थे श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री।

आर्य समाज मंदिर मार्ग में ५.५० पर कार्य क्रम आरम्भ हुआ। सर्व प्रथम पत्र की सह संपादक कु० आभा ने मंत्र पाठ किया! पं० जैमिनी शास्त्री ने प्रार्थना करायी।

संस्थान के अध्यक्ष पं० भारतेन्द्र नाथ जी ने समारोह की अध्यक्षता के लिए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी से प्रार्थना की, जो उन्होंने सादर स्वीकार की।

माननीय चौ० प्रताप सिंह जी ने, अध्यक्ष का स्वागत किया। समाज के मंत्री श्री दयाराम शास्त्री ने भी दिल्ली की समाजों की ओर से पुष्प माला पहनायी।

पश्चात् चौ० प्रताप सिंह जी ने, प्रो० शेरसिंह जी, श्री देसराज जी चौधरी, प्रो० राम सिंह जी अध्यक्ष अ० भा० हिन्दू महासभा, श्री रघुवीर सिंह जी शास्त्री भू० पू० उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी, आचार्य रत्न सिंह जी प्रधान मंत्री भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री, श्री जगदेव सिंह जी सिद्धान्ती, पूर्व संसन सदस्य व दिल्ली के प्रख्यात सर्जन डा० के० एस० श्रीवास्तव का स्वागत किया।

जन-ज्ञान की संपादक पंडिता राकेश रानी ने प्रथम प्रति माननीय रामगोपाल जी को भेंट की। पश्चात् प्रधान जी ने प्रो० शेरसिंह जी को प्रति भेंट कर विमोचन की प्रार्थना की!

विमोचन करते हुए प्रो० शेरसिंह ने कहा कि—"आज समस्त-विश्व समस्याओं से ग्रस्त है और इन समस्याओं का उद्भव केवल अभाव से ही नहीं होता, अपितु समृद्धि भी समस्याओं को जन्म देती है। उनके समाधान का मार्ग केवल विज्ञान के बल पर ही नहीं हो सकता अपितु—आध्यात्मिक विचारधारा ही अनेक समस्याओं को हल करने में समर्थ है!"

आपने कहा कि "जन-ज्ञान" साप्ताहिक उसी वैदिक-विचारधारा के प्रचार और प्रसार का सफल माध्यम सिद्ध होगा यही आशा है। यह साप्ताहिक वैदिक धर्म और संस्कृति की मर्यादाओं और मान्यताओं को सशक्त बनाने में योगदान देगा तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित करेगा।

सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान प्रो० रत्नसिंह ने अपने भाषण में कहा कि दयानन्द संस्थान द्वारा प्रकाशित यह साप्ताहिक पत्र आर्यसमाज के दस नियमों को समाज में प्रचारित प्रसारित करेगा। आर्यसमाज के सिद्धान्त ही प्रभु के प्रति कर्त्तव्य, स्वयं के प्रति कर्त्तव्य, एवम् समाज के प्रति कर्त्तव्यों की पूर्ति में समर्थ हो सकते हैं।

आपने कहा कि—संस्थान ने आज तक जो कुछ भी किया है, वह अद्भुत है। और हमें विश्वास है कि संस्थान द्वारा संचालित यह पत्र भी अवश्य ही सफल होगा।

भूतपूर्व संसन सदस्य श्री रघुवीर सिंह शास्त्री ने आशा व्यक्त की कि "जन-ज्ञान" साप्ताहिक भारतीय संस्कृति एवम् दर्शन के प्रचार प्रसार को सशक्त माध्यम बनायेगा।

श्री देसराज चौधरी ने कहा कि आर्य जन अब बातें नहीं काम करें ताकि हम अपने घर को, आस पास को आर्य बना सकें।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि—आज समय आ गया है जब हम एकता के मंत्र को जीवन में साकार करें। राष्ट्र के सम्मुख जो समस्याएं हैं उन्हें सुलझाने में आर्यसमाज महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है।

दयानन्द संस्थान के कार्यों की प्रशंसा करते हुए आपने आशा व्यक्त की कि नया साप्ताहिक जन-ज्ञान ऋषि का संदेश भू-मंडल में फैलाने में सफल होगा। आपने अपने अनुभव सुनाते हुए बताया कि आर्यसमाज का संदेश त्याग और बलिदान से ही फैला है अतः सभी को उत्साह से काम करना चाहिए।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान की शुभकामनाएं

माननीया राकेश रानी जी, नमस्ते!

आप का पत्र दिनांक २९ जनवरी, ७६ को प्राप्त हुआ। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 'जन ज्ञान' आप साप्ताहिक कर रहे हैं। मेरी हार्दिक इच्छा है कि आर्यसमाज की सभी पत्र-पत्रिकायें भारी संख्या में छपकर जनता के हाथों में पहुंचें और वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार हो। आपने मुझसे पूछा है कि आर्य समाज अब क्या करे?

मेरा निवेदन है कि अन्तर्राष्ट्रीय शताब्दी समारोह सफल होने के पश्चात आर्यजनों को महर्षि के पवित्र मार्ग पर चलकर आपसी मतभेदों को भुलाकर काम करना चाहिये। प्रारम्भ से ही आर्यसमाज का यह दुर्भाग्य रहा कि आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता सार्वजनिक प्रचार कार्य को छोड़कर आपस की छोटी-छोटी बातों में उलझते रहे। इस प्रवृत्ति को सर्वात्मना छोड़कर सर्वान्तर्यामी परमपिता परमेश्वर को साक्षी करके हम सब को मिलकर कार्य करना चाहिये। वैदिक धर्म और आर्य संस्कृति को जो बाहरी और भीतरी खतरे उपस्थित हैं उन्हें आप जानते हैं। 'जन-ज्ञान' साप्ताहिक द्वारा आप उन सभी खतरों का निवारण कर जन जागृति उत्पन्न करें, यही मेरी शुभकामना है।

भवदीय

रामगोपाल शालवाले

प्रधान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पथिक से !

हे पथिक ! चलो युग बीत गया, बैठे बैठे रोना रोते ।
क्या भाव लिये हो मौन कहो, गरिमामय वीणा-मधु खोते ।

बैठे इस रोना रोने से मंजिल होगी आसान नहीं ।
रोना रोना जगतीतल में सुख का सचमुच आह्वान नहीं ।।
मिथ्या हैं यह मधु के प्याले, अच्छा है इनसे विष पीना ।
तुझको अपनी नौका खेनी, तुझको अपने बल पर जीना ।।
क्या हार गया पंथी ! पथ पर, पल भर पीड़ा ढोते ढोते ।
हे पथिक ! चलो युग बीत गया, बैठे बैठे रोना रोते ।।

जलते हैं जग में दीप सदा, झंझाएँ भी चलती रहती ।
नभ उपल वृष्टि करता भू पर, फिर भी खेती फलती रहती ।।
चलने वाले पल भी न रुके, पवि की भीषण बरसातों से ।
पाषाण तोड़ डाले कितने, निर्झर ने निर्मम हाथों से ।।
केवल तुझको ही देखा है, पथ पर यों चेतनता खोते ।
हे पथिक ! चलो युग बीत गया, बैठे बैठे रोना रोते ।।

कैसा तेरा गतिमय उर है, उठती है जिसमें हूक यहाँ ।
कर सकती है जब एक बूंद, हिमगिरि के सौ सौ टूक यहां ।।
क्यों शोषक दल की छाती में, यह भाले झोंक नहीं देता ?
कुम्भज बनकर परवशता का सागर क्यों सोख नहीं लेता ?
तिल तिल भी यदि चलते रहते तो हम सुमेरु सर पर होते ।
हे पथिक ! चलो युग बीत गया, बैठे बैठे रोना रोते ।।

अपनी पर आ अड़ते देखे, मैंने शृगाल वनराजों से ।
पथ छोड़ दिया पन्थी ! तूने भावी भय के अन्दाजों से ।।
लड़ने का व्रतधारी सैनिक, उपहार हार में पाता है ।
जिसको निर्मल-जल पीना है वह बीच धार में पाता है ।।
तुम तो तट पर ही खाते हो, बैठे-बैठे गहरे गोते ।
हे पथिक ! चलो युग बीत गया । बैठे-बैठे रोना रोते ।।

इस जलती हुई जवानी पर जड़ता की कैसी छाप यहाँ ?
भरदे रे, उनमें नवजीवन, जीवन कैसे अभिशाप यहाँ ।
सागर पर सेतु बांधकर क्या युग धारा मोड़ नहीं सकता ?
पाषाण तोड़ने वाला हो, हथकड़ियां तोड़ नहीं सकता ?
कर दे तू पल में परिवर्तन, होनी होती होते-होते ।
हे पथिक ! चलो युग बीत गया बैठे-बैठे रोना रोते-रोते ।।

—मथुरा प्रसाद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मंगल कामनाएं

यह जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि जन-ज्ञान (हिन्दी) को आप साप्ताहिक भी कर रहे हैं। महर्षि दयानन्द ने रूढ़ियों में बंद वैदिक ज्ञान को जन-साधारण के लिए उपलब्ध बनाया और महिलाओं तथा अस्पृश्य कहाने वाले सामाजिक वर्गों में नई चेतना फैलाई। आज भी इन क्षेत्रों में बहुत काम होना शेष है। विशेषतः ज्ञान-विज्ञान दोनों के समन्वय की दृष्टि से जीवन को पवित्र बनाने की कोशिश होनी चाहिए। आशा है आपकी पत्रिका का इसमें योगदान होगा। शुभ कामनाओं के साथ।

(प्रो०) शेरसिंह ससद् सदस्य

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 'जन-ज्ञान' अब चतुर्भुज रूप धारण करने जा रहा है। एकान्त में बैठकर प्रतिपक्षी भी वेदनाद को दिग्दिगन्त में गुंजाने वाले 'जन-ज्ञान' के पांचजन्य स्वरूप को नहीं भुला सकता। जिस प्रभु ने आपको इसके सचालन की क्षमता प्रदान की वही अब उसके इस चतुर्गुण रूप के चलाने में भी चतुर्गुणी शक्ति प्रदान करेंगे क्योंकि वे तो शक्तियों के अक्षय भंडार हैं। प्रभु सामर्थ्य प्रदान करें।

—विवेकानन्द सरस्वती
गुरुकुल प्रभात आश्रम, (मेरठ)

जानकर प्रसन्नता हुई कि आप जन-ज्ञान साप्ताहिक निकाल रहे हैं। आजकल प्रचार का युग है, आर्यसमाज के दृष्टिकोण को प्रसारित करने के लिए अच्छे पत्र की सदैव आवश्यकता है।

पूर्णचन्द, एडवोकेट
भूतपूर्व प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

श्री भारतेन्द्र जी,

नमस्ते;

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 'जन-ज्ञान' मासिक को साप्ताहिक रूप में आपने प्रकाशित करने का निर्णय किया है। वैदिक विचारधाराओं के प्रचार और प्रसार के लिए निश्चय ही आपके यह प्रयास सराहनीय होंगे।

मेरी ओर से इस अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करें।

—प्रकाशवीर शास्त्री, संसद सदस्य

मान्यवर भारतेन्द्र जी;

सप्रेम नमस्ते! यह जानकर बड़ा हर्ष हुआ कि 'जन-ज्ञान' साप्ताहिक हो रहा है। आपसे घोर मतभेद रखने वाले और आपके विरोधी भी व्यक्तिगत बातचीत में यह स्वीकार करते हैं कि आपने वैदिक साहित्य के प्रकाशन व प्रचार प्रसार में जिस दक्षता का परिचय दिया है, यह अपने आपमें एक इतिहास बन गया है। सारे देश में और विदेशों में भी आपने प्रभु की कल्याणी वेद वाणी का प्रकाशन व प्रकाश कर दिया। हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी में अद्भुत ग्रंथों को प्रकाशित किया। जन-ज्ञान अंग्रेजी भी चल रहा है।

अब सुदृढ़ता से एक पग और आगे धरने पर आपको हमारी बधाई स्वीकार हो। आर्य जनता से हम सानुरोध कहेंगे कि 'जन-ज्ञान' साप्ताहिक को भी उसी प्रकार अपनाएं जैसे दयानन्द संस्थान के साहित्य को अपनाया व फैलाया। नवागत का स्वागत कीजिए।

'जन-ज्ञान' को जन-जन का लोकप्रिय पत्र बनायें। पुनः सबको बधाई। **राजेन्द्र जिज्ञासु**, अबोहर

मान्यवर भारतेन्द्र जी,

सादर नमस्ते,

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आप जन-ज्ञान को साप्ताहिक का रूप दे रहे हैं। आशा है इससे आर्य समाज की अधिकाधिक सेवा होगी।

डा० भवानीलाल भारतीय, अजमेर

अनपढ़ नौकर !

एक बाबू था। एक दिन उसके पास एक आदमी आया। उसने बाबू से कहा—"मुझे नौकर रख लो। मैं गरीब आदमी हूं।"

बाबू—अच्छा तुम्हारा नाम क्या है?

नौकर—जी मुझे मौजू कहते हैं।

बाबू—अच्छा तुम कितनी तनखा लोगे?

नौकर—जी पांच ऊपर बीस।

बाबू—अच्छा घर में काम करो। (मौजू चला गया) एक दिन बाबू जी के घर में मेहमान आ गए। बाबू ने मौजू से कहा—"जा केले ले आ। मौजू गया और केले लाकर मेज के ऊपर रख दिये। बाबू ने कहा—"इसे छील के लाओ। मौजू अन्दर जाकर केले के अन्दर की चीज खा गया। और छिलके लाकर मेज पर दिये।

बाबू ने कहा—"अरे बेवकूफ अन्दर की चीज काम की होती है, अच्छा जा और खजूर ले आ। छील कर लाना।" मौजू ने खजूर खा ली और गुठलियां लाकर मेज पर रख दीं।

बाबू ने कहा—"अरे बेवकूफ यह क्या?" मौजू ने कहा—"आप ही ने तो कहा था कि अन्दर की चीज काम की होती है, बाबू ने नौकर की बेवकूफी पर उसे निकाल दिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या होगा इन सम्मेलनों से ?

महोदय,

आजकल विभिन्न समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में आर्य समाज स्थापना शताब्दी के संदर्भ में काफी कुछ पढ़ने को मिल रहा है। मैं समझती हूं कि शताब्दी तो आत्म निरीक्षण का अवसर है। जिस संस्था ने समस्त विश्व का उपकार करना अपना उद्देश्य माना था, जिस संस्था ने संस्कारों की पुनः स्थापना के लिए मौलिक कार्य शुरू किया था, जिस संस्था ने विश्व के श्रेष्ठ पुरुषों को एक मंच पर इकट्ठे होने के लिए आह्वान किया था, जिस संस्था के लिए हिन्दू-मुस्लिम, सिख, ईसाई जैसे मत कोई अर्थ न रखते हों, वह सभी को मानव मानता हो, जिस संस्था के लिए एक विदेशी विद्वान सर वैले-टाईम ने अपनी पुस्तक 'अनरैस्ट इन इण्डिया' में लिखा था —'जहां-जहां आर्यसमाज है, वहां-वहां राजद्रोह प्रबल है,' अर्थात् आर्यसमाज ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ने और भारत को स्वतन्त्र कराने में काफी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी—आज उसी संस्था का स्वरूप विकृत होता जा रहा है।

सारा संसार आर्यसमाज की ओर आशा भरी नजर से देखता रहा है, अफसोस कि नेतृत्व और आन्दोलन पुरातनपंथी नेता और अस्सी अस्सी साल के युवा कार्यकर्ता (?) पुनः सोचेंगे कि आर्यसमाज किधर जा रहा है और उसे किधर जाना चाहिए ?

यदि हम जलसे-जलूसों और भाषणों के माहौल में ही फंसे रहें, झूठी शान, प्रतिष्ठा, आडम्बर में लगे रहें, शक्ति-प्रदर्शन के नाम पर हजारों-लाखों श्रद्धालुओं की लीडरी (!) इकट्ठी करते रहें—इससे आम जनता के सामने और तमाशों की तरह एक तमाशा ही कर सकते हैं लेकिन महर्षि दयानन्द के समता मूलक समाज की स्थापना का स्वप्न कदापि पूर्ण नहीं कर सकते।

नया युग किसी बात को धर्म अथवा ईश्वर के नाम पर झूठ-मूठ कुछ भी स्वीकार नहीं कर सकता। धर्म, ईश्वर और वेदों की दुहाई देकर हम विदेशियों को तो इन सब पर सोचने को शायद विवश कर सकते हो, लेकिन अपने देश में इन्हें आलमारियों में सड़ने से नहीं बचा सकते।

दरअसल, आर्यसमाज का जन्म एक मजहब, पंथ, सम्प्रदाय के रूप में न होकर अन्याय, दमन, अज्ञान, अभाव के खिलाफ एक सशक्त आंदोलन और अंध-विश्वास के खिलाफ एक सतत संघर्ष के रूप में हुआ था। अतीत की दुहाई देकर हम नारे लगाने वाले वर्ग समूह में तो शामिल हो सकते हैं लेकिन ऐसे 'आस्तिक युग' की स्थापना की संभावना कदापि पैदा नहीं करते, जिसमें जन्म के स्थान पर गुण, कर्म, स्वभाव, प्रतिभा का सही प्रतिनिधित्व हो।

पिछले सौ वर्षों में हम किन क्षेत्रों में आगे बढ़े हैं और किन में पीछे ? यह हमारी प्रगति का चिन्ह है अथवा गिरावट की हद ! निःसंदेह हमें इन प्रश्नों पर शांत मन से विचार करना होगा।

—कु० चंद्रकान्ता आर्य
परिसर, दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली-११०००७

आर्य जगत् को नेतृत्व दें

मान्य श्री भारतेन्द्र नाथ जी,

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि आपने अपनी जन-प्रिय, धार्मिक क्रांतिकारी विख्यात मासिक पत्रिका "जनज्ञान" का साप्ताहिक संस्करण भी निकालने का कठिन व्रत अपनाने का दृढ़ संकल्प कर लिया है। आर्य विचारों से सुरभित, ऋषि दयानन्द के स्वर्णिम स्वप्नों को साकार करने वाला तेजस्वी साप्ताहिक पत्र की अनिवार्य आवश्यकता थी जिसकी पूर्ति आप करने जा रहे हैं। ऋषि के प्रति ध्रुव निष्ठा और साध्य साधन में तपोमय तितिक्षा तथा उद्दीप्त कर्मठता को देखकर मुझे आशा है कि आपका साप्ताहिक "जन ज्ञान" आर्य युवकों में ही नहीं प्रत्युत राष्ट्र भर के जन-मन को अपनी मधुर ज्ञान गंगा से आप्लावित करेगा।

'संस्थान' के द्वारा हुयी महत्वपूर्ण सेवा आर्य समाज की है। चारों वेदों को सरल, ललित एवं प्रसादपूर्ण हिन्दी भाषा में करके नयनाभिराम सुरुचि-पूर्ण सज्जा के साथ प्रकाशित करके आपने पहले ही चिर-स्मरणीय सेवा भारत राष्ट्र एवं भारतीय संस्कृति की की है। आपके द्वारा प्रकाशित होने वाले अंग्रेजी एवं हिन्दी जन-ज्ञान (मासिक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

केवल पत्रिका मात्र न होकर स्थायी साहित्य का अंग बन चुके हैं। ऋषि दयानन्द एवं पवित्र वाणी वेद के प्रति आपकी जो साधना है—उसका फल अवश्य उत्कृष्ट होगा—ऋषि की आत्मा इससे अवश्य सन्तुष्ट होगी।

हमने अभी कुछ दिन हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्य समाज स्थापना शताब्दी का महान समारोह भारत की राजधानी में शान के साथ मनाया है। आर्य जनता ने लाखों की संख्या में सम्मिलित होकर यह प्रमाणित कर दिया है कि ऋषि के भक्त सोये नहीं, उनमें वह अग्नि अब भी प्रदीप्त है जो सौ वर्ष पूर्व ऋषि ने जागृत की थी। जनता का समुद्र लहरा रहा था—खब सजधज थी—दौड़ धूप भी बहुत थी—परन्तु जनता-जनार्दन का त्राता—मार्ग दर्शक—निःस्पृह निरीह दयानन्द सरीखा गुरु नेता न पाकर यह हृदय हतोत्साह ही हो रहा था।

जनता की आकांक्षा थी कि कोई पथ-प्रदर्शक निकले। कोई महात्मा मुन्शीराम या महात्मा हंसराज ऋषि के यज्ञ में आत्माहुति देने के लिए निकलें—परन्तु यह इच्छा मृग-मरीचिका बन कर रह गई। ईर्ष्या-द्वेष—दम्भ-मात्सर्य—आडम्बर और कार्य हीनता का नग्न नृत्य देख कर श्रद्धालु जनता निराश है। "विश्व बन्धुत्व" के अग्रदूत ऋषि दयानन्द के भक्त आज आत्म-श्लाघा एवं राजनैतिक परिधि में डूबे जा रहे हैं यह देखकर दुःख होना स्वाभाविक है। मुझे तो ऐसा लग रहा था कि जनता किसी सच्चे नेता की तलाश में थी वह मिल न सका, निराश ही लौटी। कुछ सच्चे वेदज्ञों को और कुछ तथाकथित वेदज्ञों को सम्मानित करने का नाटक भी हुआ। परन्तु वेदज्ञों के अन्वेषण के लिए कोई ठोस प्रयास नहीं किया गया। प्रत्युत वे इस से अपमानित एवं हतोत्साह ही हुए। वेदज्ञ सम्मान के भिक्षुक नहीं होते।

मैं चाहता हूं कि आप का यह प्रयास कुछ इस दिशा में कार्य करे। मुझे आशा है कि आप अवश्य यदि इस दुर्गम्य पथ को अपनाएंगे तो सफल होंगे। साप्ताहिक जन ज्ञान दैनिक बनकर राष्ट्र का मार्ग दर्शन करे। हम "संगठन सूक्त" का पाठ प्रति सप्ताह आर्य मन्दिरों में सस्वर करते हैं परन्तु कारनामे हमारे विघटन के होते हैं—'जन ज्ञान' यदि भारत जनता को ऐक्य सूत्र में बांधने का प्रयत्न करे तो मैं समझता हूं—आपका यश अमर होगा आपकी कर्त्तव्य-परायणता को देखकर तो मैं आशा-वादी हूं। वेद-वाणी घर-घर मुखरित होगी ऋषि दयानन्द का उत्तम बलिदान रंग लायेगा, वैदिक धर्म और भारत राष्ट्र विश्व की विभूति होगी—इन भावनाओं से मैं जन-ज्ञान के साप्ताहिक संस्करण का अभिनन्दन करता हूं। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह आपको जन-सेवा की अधिक से अधिक शक्ति दे।

डा० परमानन्द एम. ए. पी. एच. डी.
फरीदाबाद

●यदि आर्यजनों में एकता हो तो.....

महोदय,

सेवा में निवेदन है कि इस समय आर्यसमाजों द्वारा वेद प्रचार नहीं के बराबर हो रहा है, वेद प्रचार न होने से गुरुडम व अंध श्रद्धा प्रचारक मत, पंथ बढ़ रहे हैं। पाखंडी, धूर्त लोग भोली भाली जनता को धर्म के नाम पर लूटकर हर तरह से नुकसान पहुंचा रहे हैं। अपने लाभ के लिये, लोगों को स्वर्ग और मोक्ष प्राप्ति का झूठा आश्वासन देकर नर बलि जैसे घोर नीच कर्म तक करवा कर इन सदाचार विरोधियों ने भ्रष्टाचार फैलाकर देश, धर्म व जाति को कमजोर बनाया है। इनसे देशवासियों को बचाने की शक्ति केवल आर्यसमाज में ही है। यदि आर्य जन अपने झगड़े समाप्त कर दें और आपस में मिल कर आर्यसमाज को शक्तिशाली बनाने की सफल योजना बनावें, जिससे सर्वत्र इसका यश कीर्ति बढ़े।

इस अवसर पर निम्नलिखित सुझावों पर दिल खोल कर विचार किया जावे, उचित संशोधन के साथ निर्णय लिया जाये तो समाज बलशाली बनकर विरोधियों पर विजय प्राप्त करने में समर्थ हो सकेंगी।

१. राजनीतिक पार्टी का सदस्य वा राजनीतिक कार्यकर्ता आर्यसमाज का केवल साधारण सदस्य ही रहे। किसी अवस्था में भी वह समाज का पदाधिकारी न रहे।

२. अखिल भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्माण किया जावे, प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाएं उनसे मिली होनी चाहियें जिसके प्रतिनिधि एक देश के नाते सार्वदेशिक सभा में जावें।

३. सार्वदेशिक सभा को संसार के (पृथ्वी) समस्त देशों की प्रतिनिधि सभा माना जाये। सम्बंधित देशों के सदस्य और उनके भेजे हुए प्रतिनिधियों द्वारा ही इसका संचालन होना चाहिये।

निवेदक,
गोविन्दराम नागदेव आर्य
मंत्री, आर्यसमाज, वारशीया कालोनी, बड़ोदा, (गुजरात)

सत्यार्थ प्रकाश बांटें!
ऋषि जीवन प्रसारें!
और
घर-घर में दे पहुंचाएं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—अवनीन्द्र विद्यालंकार

श्रीकृष्ण ने कहा था—

शक्ति के बिना न्याय नहीं मिलता

श्रीमद्भगवद् गीता भारतीय राज-धर्म-शास्त्र का संक्षिप्त विश्वकोष है। इसमें भगवान ने अपने विराट्-रूप का वर्णन करते हुए कहा है : 'मैं बलवानों का बल हूँ।' यह वाणी युगों के सत्य को प्रकट करती है।

ठीक है, अर्जुन को युद्ध में प्रवृत्त करना था, अतः बल पराक्रम और क्षात्र धर्म की महिमा बखानना सर्वथा उचित था। 'पौरुषं नृषु' के कथन से पौरुष की और

"दंडो दमयतामस्मि,
नीतिरस्मि जिगीषताम्।

कहकर दंडनीति और विजिगीषा वृत्ति का महत्व प्रतिपादित किया गया। क्षत्रिय के लिये लड़ते हुए मरना पुण्य देने वाला है, स्वर्ग का रास्ता खोलने वाला है। श्रीकृष्ण का मत है।

'हतो वा प्राप्यसि स्वर्गम्।'

परन्तु संग्राम स्वर्ग पाने की इच्छा से नहीं किया जाता यह भी एक सत्य है। स्वामित्व की रक्षा के लिये लड़ाई लड़ी जाती है। इसी वास्ते भगवान ने कहा है :

जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।

इस बात की पुष्टि निम्न उक्ति से की है।

'तस्मात्वमुतिष्ठ यशो लभस्व
जित्वा शत्रून् भूक्ष्व राज्य समृद्धम्।'

महाभारत का महायुद्ध स्वामित्व की स्थापना और संरक्षण के लिये लड़ा गया। यदि स्वामित्व की भावना का अंत हो जाता तो युद्ध का प्रयोजन ही समाप्त हो जाता। फिर यह कहावत भी प्रचलित नहीं होती : 'जर जोरू-जमीन, ये हैं तीनों लड़ाई की जड़। ये तीनों स्वामित्व के प्रतीक हैं। अतः लड़ाई के कारण भी रहे हैं।

नैसर्गिक भावना

स्वामित्व की भावना शिशु लीला तक ही सीमित नहीं है। यह मानव की नैसर्गिक सुसंस्कृत मूल भावना है। यह आज भी सभ्य जगत में मान्य है और प्रतिष्ठित है। जिस देश में जिस सीमा तक मान्य है, पुष्ट है, वह देश अन्यों से उतना ही अधिक आगे हैं। इतिहास साक्षी है, यह युक्तिवाद अकाट्य और पूर्णतः युक्तिसंगत और कालसंगत है। निष्काम कर्मयोग के तत्वज्ञान के अभाव में भी श्रीकृष्ण की यह वाणी युगों-युगों तक गूंजती रही। यह एक त्रिकाला बाधित सत्य है। इस सत्य को भारत ने भुला दिया। इस सत्य की उपेक्षा की। अतः आज भारत दीन-हीन अवस्था में है।

बल और पराक्रम आज के युग में भी प्रतिष्ठा प्राप्ति का एक साधन है। सभ्य देशों की विशाल सेनायें क्या सूचित करती हैं?

अणु युग में यह जरूर कहा जाता है। युद्ध विवाद मिटाने का साधन नहीं है। यह कहते हुए भी हरेक ने सेना बढ़ाई है। किसी देश ने घटाई नहीं। फिर इस वाक्यांश का क्या अर्थ है : युद्ध से समस्या हल नहीं होती। यह निरुपाय, निराश, हताश मानव समाज के मन में हिरोशिमा नागासाकी जापानी नगरों के विनाश से उत्पन्न भय को सूचित करता है। क्योंकि यह कल्पना मन में घर कर गई है कि लड़ाई यदि छिड़ी तो लड़ने वाले ही नहीं, न लड़ने वाले भी स्वर्ग का द्वार अपने लिये खुला पायेंगे। प्राण रक्षा का कोई उपाय नहीं है। अतः निराशा में कही गई उक्त बात है। यदि आज मानव मस्तिष्क सुरक्षा का कोई उपाय ढूंढ निकाले, जैसे उसने महाभारत के समय आग्नेयास्त्र के जवाब में वरुणास्त्र पा लिया था, तो वह पुनः भगवान् के शब्दों को दोहरायेगा।

'हतो वा प्राप्यसि स्वर्गं
जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।'

युद्ध सर्वथा त्याज्य है, यह सिद्धान्त मानकर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति चलाने की कोशिश की जा रही है। इस कारण बल, पराक्रम, शौर्य, वीरता आदि गुणों की महत्ता को भूत के गर्भ में छिपाया जा रहा है। आज के युग में इन गुणों की शिक्षा देना भी उचित नहीं माना जाता।

परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति ने स्वामित्व की भावना का अन्त नहीं किया। इसकी आवश्यकता भी नहीं मानी। इसके विपरीत इसको बढ़ाया है। अन्यथा यूराल से लेकर साइबेरिया तक फैली रूस चीन सीमा के दोनों ओर सशस्त्र फौजें तैनात न रहतीं, स्वेज नहर का मार्ग बन्द न होता। युद्ध का मुख्य कारण स्वामित्व की भावना है। इसे कोई राजनीति नष्ट करने में समर्थ नहीं।

नीति शास्त्र की दृष्टि से यह बात कही जाती है।

बल का आविष्कार युद्ध है। स्वामित्व स्थापित करना और दूसरों को दास बनाना इसका लक्ष्य है। हिंसा और हत्या इसके साधन हैं। पर यह तो पाशविकता है, पशुधर्म है। सभ्यता के आदिम युग में यह भले ही समर्थनीय हो, आज बीसवीं शती के उत्तरार्ध में इसका समर्थन नहीं किया जा सकता। मानव प्रगति का फिर क्या अर्थ शेष रह जायेगा?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानव प्रगति

मानव प्रगति का लक्ष्य है : स्वतंत्रता, आत्म-प्रतिष्ठा बल, पराक्रम की तुलना में स्वतंत्रता, समता, न्याय व प्रतिष्ठा ये मानवीय मूल्य अधिक स्थायी व चिरंतन है, अतः संरक्षणीय है। इस वास्ते बल, पराक्रम, युद्ध त्याज्य होने चाहिये। अतः पराक्रम युद्ध मूलतः स्वामित्व की प्रतिष्ठा के लिए है। अतः स्वामित्व की प्रतिष्ठा भी त्याज्य होनी चाहिये।

यही नहीं आज का समाज जिस दण्डनीति के आधार पर टिका हुआ है वह भी त्याज्य मानी जानी चाहिये क्योंकि उसका आधार भी स्वामित्व की प्रतिष्ठा और बल है। अतः उन्नत सुसंस्कृत समाज की स्थापना के लिए बल, पराक्रम, युद्ध, स्वामित्व की प्रतिष्ठा और दण्डनीति का परित्याग करना आवश्यक है। प्रश्न यह है क्या आज के सभ्य जगत के मानव समाज का यह लक्ष्य है? क्या उद्देश्य की सिद्धि के वास्ते बल, युद्ध का परित्याग करना अपरिहार्य है? साथ ही यह प्रश्न भी होता है कि क्या स्वतंत्रता, आत्म-प्रतिष्ठा, समता, न्याय आदि की प्राप्ति बल, पराक्रम, युद्ध के अभाव में सम्भव है?

पहली बात यह जानने की है कि बल और बल पर स्थापित दण्डनीति द्वारा जिसकी धारणा हुई वह समाज सुसंस्कृत, नैतिक व उन्नतावस्था में पहुँचा या नहीं यदि वह पहुँचा प्राचीन काल की इस धारणा के कि दण्ड और दाण्डिक के सिवाय समाज की प्रगति सम्भव नहीं, आज असंगत और त्याज्य क्यों माना जाय?

दण्डनीति का आधार बल है, यह पहुंचा या नहीं। यदि वह पहुंचा तो सत्य है किन्तु इसी कारण यह मानना कि वह समाज बल की प्रतिष्ठा करने वाला है, भारी भूल होगी। चोरों, लुटेरों, बदमाशों, डकैतों, खूनियों, सदृश गुनहगारों को दण्ड देने के लिये न्यायालय में ले जाया जाता है। क्या यह कहा जायेगा कि न्यायालय बल की प्रतिष्ठा मानता है? बल, आक्रमण और हिंसा का सूचक है, अतः इसका त्याग करना चाहिये, इस मान्यता का आधार एकांगी दृष्टिकोण है। शस्त्र से खून होता है अतः रोगियों पर भी शस्त्र क्रिया न की जाये, क्या यह बात मान्य और स्वीकार्य होगी।

बलोपासना

बलोपासना की आवश्यकता दुर्जनों को सावधान करने सन्मार्ग पर प्रवृत्त करने और उनको उनका योग्य स्थान बताने के लिये है। धर्म-भीरू नागरिक शान्ति सुख से जीवन बिताएं, इसके वास्ते भी है। हृदय परिवर्तन की बात तो सर्वथा अचिन्त्य है। गुनहगारी प्रायः आनुवंशिक है। यह सत्य जोहान्नेस ने अपनी पुस्तक 'आइन ऐज डैस्टोनी' में प्रतिपादित किया है। अतः समाज की धारणा के लिए दण्डनीति की अनिवार्य और अपरिहार्य आवश्यकता है। यहाँ प्रश्न बल और बलवान की प्रतिष्ठा का नहीं, अपितु सुस्थिति का है। दुरान्वय से यदि यह बल की प्रतिष्ठा है तो यह समाज को निरुपद्रवी और सुखी बनाने के लिये है। एक बात और देखने की है कि बलोपासना, पराक्रम, स्वामित्व भावना इत्यादि बातें सदा हिंसा को जन्म नहीं देती और न जगाती हैं। गिर्यारोहण अन्तरिक्ष यात्रा, चन्द्रावतरण, सागरान्वेषण इत्यादि प्रगति के चिन्ह हैं। यह बलोपासना और स्वामित्व भावना का फल है। अमरीका का चन्द्रयान ही चन्द्रमा पर उतरा, सोवियत रूस का नहीं, यह इस बात को प्रमाणित करता हैं कि स्वामित्व की भावना का अन्त करने का प्रयास मानव प्रगति को अवरुद्ध करना है। शारीरिक पराक्रम मानव समाज के जीवित होने का लक्षण है। बल का आक्रमण के वास्ते उपयोग न करने पर भी आत्म-रक्षा और आत्म प्रतिष्ठा के लिये इसका व्यवहार आवश्यक है। व्यक्ति समाज व राष्ट्र की प्रतिष्ठा और रक्षा के अनेक साधनों में बल एक साधन है। बलहीन व्यक्ति व बल शून्य राष्ट्र की अस्मिता और स्वाभिमान कभी ऊर्जितावस्था में नहीं पहुंच सकते। इस तरह वे प्रतिष्ठा के साथ जीवित भी नहीं रह सकते।

समाज और राष्ट्र की प्रतिष्ठा प्रमुखतः पुरुष वर्ग और उसमें भी तरुण वर्ग पर निर्भर करती है, अतः उसको स्वाभिमान से जीवित रहने के लिये बलवान होना चाहिये, बल की उपासना करनी चाहिए। पुरुष के पौरुष और पुरुषार्थ का इसके सिवाय और क्या अर्थ है?

शान्तिमय सह-अस्तित्व

अणु युग की छाया में रहने वाले मानव ने अपनी भीति को छिपाने के लिए शान्ततामय सह-अस्तित्व का एक मंत्र निकला है। परन्तु यह एक साधन है, साध्य नहीं। मानव को अपनी प्रगति के लिये अस्तित्व चाहिए। परन्तु अस्तित्व के वास्ते अस्तित्व नहीं चाहिए। शत-प्रतिशत शान्ततामय सह-अस्तित्व का अर्थ होगा मानव का आदर्श शंख, पत्थर आदि है। अत्याचारी, विनाशक, अन्यायी व्यक्ति और शासन के साथ सह-अस्तित्व सदा अशक्य होगा। क्षमावृत्ति और अहिंसा वृत्ति की उपासना के लिए अन्याय सहन किया जाए, यह कोई नहीं कहेगा और न कोई मानेगा। अन्याय के विरुद्ध छाती तान कर खड़े हो इस पौरुष पराक्रम और स्वामित्व की भावना की नितान्त आवश्यकता है।

यदि इन्डोनेशिया में युवा वर्ग बलवान न होता तो आज इन्डोनेशिया की क्या यह स्थिति होगी? वह भी पूर्वी यूरोप के समान सोवियत रूस का एक मांडलिक हो जाता।

(शेष पृष्ठ २५ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामयिक विचार

सराहनीय-अनुकरणीय

विविधि की विडम्बना कहें या अन्धानुकरण की पराकाष्ठा कि गुर्जर धरा में जन्मे देव दयानन्द ने जिस देवलिपि एवम् हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता प्रदान किए जाने का सद् स्वप्न अपने नेत्रों में संजोया था, जिस भारतीय जन साधारण के कार्य व्यवहार की भाषा के रूप में आसेतु हिमाचल प्रचलित किए जाने की कल्पना की थी, उसका अनुयायी होने के अनेक दावेदार आर्यसमाज शताब्दी समारोह संपन्न करने के उपरान्त भी अपने मांगलिक कार्यों के लिए अंग्रेजी में निमन्त्रण पत्र मुद्रित कराकर उन्हें अपने प्रिय एवम् सुहृद जनों में वितरित कराने का मोह संवरण नहीं कर पाते। महर्षि दयानन्द देववाणी संस्कृत के पुनरूद्धार के लिए हिन्दी को प्रथम सीढ़ी मानते थे। अन्ततोगत्वा वे उसयुग की कल्पना करते थे कि जिसमें संस्कृत को स्वदेश में पुनः उसका गरिमापूर्ण स्थान प्राप्त होगा। यह भी सत्य है कि स्वदेश में आज हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में भी मान्यता मिली है और संस्कृत में समाचार प्रसारण की व्यवस्था भी आकाशवाणी के प्रसारणों में की गई। इन पगों के लिए शासन निश्चय ही बधाई का पात्र है। किन्तु हमें कुछ कहना है तो उन्हीं से कि जो देव दयानन्द के स्वप्नों को साकार करने का संकल्प ग्रहण करने का दम भरते हैं। उनमें ऐसे लोगों की संख्या नगण्य नहीं कि जिन्होंने अपने व्यवसाय व कार्य व्यवहार की भाषा के रूप में आज भी अंग्रेजी को ही स्थान दिया हुआ है। यदि उनसे इस संबंध में कोई कुछ कहे तो जहाँ अधिकांश व्यापार वृद्धि के लिए अंग्रेजी पत्र व्यवहार की अनिवार्यता जताते हैं तो मांगलिक कार्यों के निमन्त्रण भी परायी भाषा में मुद्रित कराने के लिए संपन्न एवम् बुद्धि जीवी वर्ग से अपने संपर्कों की दुहाई देते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वर्षों की मानसिक दासता से अभी उनका अंतः करण सर्वथा मुक्त नहीं हो पाया है।

कुछ ही दिन पूर्व बम्बई के एक मुस्लिम मतावलम्बी द्वारा प्रस्तुत किया गया एक उदाहरण ऐसे सभी बुद्धिवादियों के लिए एक चुनौती है। ये सज्जन हैं बम्बई के श्री गुलाम दस्तगीर। जिन्होंने अपने छोटे भ्राता के विवाह का निमन्त्रण हिन्दी में भी नहीं अपितु संस्कृत में मुद्रित कराकर एक अनुकरणीय एवम् प्रेरक पग उठाया है। उनका यह स्तुत्य पग उन अनेकों की सुप्त आत्मा को जगाने में भी संभवतः सहायक सिद्ध होगा जो यह कहते हुए भी संकोच नहीं करते कि संस्कृत तो एक मृत भाषा है।

एक संस्कृत विद्वान् श्री सोम प्रकाश शर्मा के अनुसार महाराष्ट्र में श्री दस्तगीर ही इस संबंध में अकेले उदाहरण नहीं हैं अपितु इस प्रदेश के कई अन्य संस्कृत प्रेमी मुस्लिम बंधुओं ने भी अपने मांगलिक कार्यों के निमन्त्रण पत्र संस्कृत में मुद्रित कराकर प्रसारित करने का अनुकरणीय पग उठाया है।

विश्वास किया जाना चाहिए कि उपरोक्त मुस्लिम बन्धुओं द्वारा प्रस्तुत यह अनुकरणीय उदाहरण स्वयं के आर्यसमाजी होने में गौरव बोध करने वाले तथा अपने आपको महर्षि दयानन्द का अनुयायी होने की सार्वजनिक घोषणा करने वाले आर्यजनों को भी प्रेरणा प्रदान करेगा।

वस्तुतः बम्बई के मुस्लिम संस्कृत प्रेमी श्री गुलाम दस्तगीर बधाई के ही पात्र हैं कि जिन्होंने अपने संप्रदाय के बन्धुओं को राष्ट्र की प्राचीन संस्कृति और भाषा के प्रति अनुरक्त होने एवम् राष्ट्र की मूल जीवन धारा में समाहित होने का पथ दर्शाया है। उनका यह स्तुत्य कार्य उनके समाज के लोगों के लिए तो अनुकरणीय है ही साथ ही साथ उन कोटि-कोटि भारतीयों के लिए भी मार्गदर्शक है कि जो प्राचीन ज्ञान विज्ञान की भाषा संस्कृत के प्रति कोरी श्रद्धा रखते हैं किन्तु व्यवहार में उससे दूर ही रहते हैं।

गीत

मानव का मन शान्त करो हे !
काम-क्रोध-मद-लोभ-दम्भ से
जीवन को एकांत करो हे !
हिलें वासना कृष्ण, तृष्ण उर,
खिलें विटप छाया,जल सुमधुर,
गूंजें अलि गुंजन के नूपुर
निज पुर-सोमा प्रांत करो हे !
विहग-विहग नव गगन हिला दे
गान खुले कंठ-स्वर गा दे
नभ-नभ कानन-कानन छा दे
ऐसे तुम निष्कांत करो हे !
रुखे मुख की रेखा सोये
फूट-फूट कर माया रोये
मानस सलिल मलिनता धोये
प्रति मग से आक्रांत करो हे !

—'निराला'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—यशपाल

स्वास्थ्य

प्राकृतिक चिकित्सा के चमत्कार

●●●

सन् ४० की बात है। मामाजी (हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्रकुमार) को बंबई हिन्दी विद्यापीठ में दीक्षांत भाषण देने के लिये बंबई जाना था। हम लोग सूचना दे चुके थे कि अमुक तारीख को अमुक गाड़ी से पहुँच रहे हैं और वहाँ सब तैयारियाँ हो चुकी थीं। जाने के दो दिन पहले अकस्समात् मामाजी की आँखें दुखने आ गईं और ऐसे जोर से कि हम लोगों को लगा, जाना नहीं हो सकेगा। बड़ी परेशानी हुई, विशेषकर यह सोच कर कि समारोह के विशेष अतिथि के न पहुँचने से संयोजकों तथा विद्यापीठ के विद्यार्थियों और अध्यापकों को कितनी निराशा होगी। दिन भर आँखों को आराम दिया; लेकिन रात होते-होते लालाथी और दर्द घटने के बजाय और बढ़ गया। उस समय दवा भी कहाँ से आती? मामाजी ने कहा—'एक काम करो। घर में पीली मिट्टी है। उसकी पट्टी बना कर मेरी आँखों पर बाँध दो।" मैं मिट्टी लाया, पानी में सानी और बाजरे की रोटी के बराबर मोटी पट्टी बना कर दोनों आँखों पर बाँध दी। रात भर बँधी रही। सवेरे उठे तो यह देख कर हम लोगों के आश्चर्य और हर्ष का ठिकाना न रहा कि आँखों को रुपये में बारह आने फायदा था। अगले दिन फिर मिट्टी की पट्टी रक्खी और तीसरे दिन जब चले तब तकलीफ मुश्किल से पैसे भर रह गई थी। बहुत से लोगों की आँखें आते देखी हैं; लेकिन दो दिन में यों अप्रत्याशित रूप से ठीक होते देखने का पहला ही अवसर था।

लगभग तीन वर्ष पूर्व की एक दूसरी घटना है। मुझे पीलिया हो गया। एक दिन पहले काम पर गया था। वहीं आफ़िस में तबियत बिगड़ी। घर लौटा। अगले दिन आँखें पीली हो गईं और पेशाब हल्दी जैसा आने लगा। धीरे-धीरे पिलाई सारे शरीर पर फैल गई। शहरों में डाक्टरी चक्कर से सौभाग्यशाली ही बच पाते हैं। मुझे भी देखने के लिये एक के बाद एक, अनेक डाक्टर आये। पेट दवाओं का गोदाम बना और मजे की बात यह है कि बीमारी को कोई लाभ नहीं। जितने डाक्टर आये, सबकी रायें अलग-अलग थीं तो दवाइयाँ भी अलग होनी ही थीं। मेरी पत्नी की छोटी बहन, जो डाक्टर है, देखने आई और उन्होंने पैन्सिलिन और विटामिन बी काम्प्लेक्स के इंजेक्शनों का कोर्स दिया। यह सब हो रहा था; लेकिन मुझे साफ दीखता था कि रोग को फायदा नहीं है। पिलाई ज्यों-की-त्यों। भूख रत्तीभर नहीं। जो खाता, निकल जाता। जिगर काम ही नहीं कर रहा था। डाक्टरी दवाइयाँ खाते-खाते जब तंग आ गया तो मैंने विद्रोह कर दिया। दवाइयाँ तेज होती थीं और तबियत को बिगाड़ती थीं। एक दिन किसी ने बताया कि इस रोग में मूली और पपीता बहुत फायदेमंद होते हैं। उन दिनों मूलियाँ खूब आ रही थीं। कच्ची खाना तो जरा मुश्किल था। पत्तों का रस निकलवा कर थोड़ा-थोड़ा करके पीना शुरू किया। दो-एक दिन में ही मालूम हुआ कि वह तो बड़ी लाभ की चीज है। धीरे-धीरे रुचि बढ़ी और मैं मूली और पपीता काफी मात्रा में लेने लगा। इस बीच मेरा छोटा भाई एक आदमी को लाया, जिसने कपड़े की पोटली में बँधी एक जड़ी को पानी में रगड़ कर और पानी हथेली पर रख कर नाक द्वारा सूंघने को कहा। मैंने सूंता। परिणाम यह हुआ कि बाईस घण्टे तक मेरी नाक से पानी की बूंदें टपकतीं रही, हल्दी-जैसी पीली। तीसरे-चौथे दिन उसने वही जड़ी सुंघाई और सात घण्टे तक फिर पानी टपका। पपीते और मूली का प्रयोग चल ही रहा था। आगे चलकर तो यह प्रयोग इतना बढ़ा कि मैं दिनभर में कच्ची, उबालकर और रस निकाल कर करीब ढाई सेर मूली खा जाता। सवेरे थोड़ी देर खुली हवा में टहलता और पेट के जरा भारी होते ही एनिमा ले लेता। नतीजा यह हुआ कि कुछ ही दिनों में पीलाई जाती रही और जिगर भी धीरे-धीरे काम करने लगा। डाक्टरी चक्कर चला होता तो भगवान जाने कितना धन स्वाहा होता, तेज दवाइयों से बैचेनी सहनी पड़ती और फिर कौन यह कह सकता कि आराम हो ही जाता।

तीसरी घटना गत वर्ष की है। हिन्दी के सजीव और प्रखर साहित्यकार श्रद्धेय पं० बनारसीदास चतुर्वेदी की सुपुत्री बहन देवकी का विवाह था। फीरोजाबाद पहुँचा तो देखता क्या हूँ कि दादाजी (चतुर्वेदीजी) चारपाई पर पड़े हैं। मालूम हुआ कि बवासीर के मारे हैरान हैं। ढेर-का ढेर खून जा रहा था। थोड़ा ज्वर भी था। कुछ देर बाद सिविल सर्जन उन्हें देखने आये। बोले—पाँच मिनट में ठीक किये देता हूँ। उन्होंने मस्से अन्दर कर दिए और चले गये। दस मिनट बाद ही मस्से फिर बाहर निकल आये और तकलीफ जैसी-की-तैसी। मैंने कहा—"दादाजी, सिविल सर्जन का इलाज तो आपने कर लिया। आप कहें तो एक इलाज मैं भी कर लूं। उन्होंने अनुमति दे दी। पीली मिट्टी वहाँ काफी मिल जाती है। उसमें से थोड़ी-सी लेकर मैंने पानी में सानी और पट्टी बना कर रोग-ग्रस्त स्थान पर बाँध दी। ऊपर से ऊनी मफलर लपेट दिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मिट्टी का रखना था कि जरा-सी देर में उन्हें चैन पड़ गया। जलन जाती रही। आधा-आधा घंटे बाद दो-तीन पट्टियां बदलीं कि मस्सों का तनाव भी दूर हो गया। रात को पट्टी बाँधी तो उन्हें ऐसी गहरी नींद आई कि खोलने की सुधि ही न रही। कहाँ चारपाई से उठा नहीं जाता था और कहाँ अगले ही दिन घूमने-फिरने लगे। उन्होंने फिर डाक्टर को बुलाने का नाम ही नहीं लिया और तीन दिन तक मिट्टी के प्रयोग से ऐसा फायदा हुआ कि कहने लगे—यह तो चमत्कार हुआ है।

नगर के कृत्रिम जीवन में आज डाक्टर और डाक्टरी इलाज पर लोगों का इतना गहरा विश्वास हो गया है कि अपने घरेलू, सस्ते और शर्तियां इलाज की ओर उनका ध्यान ही नहीं जाता। डाक्टरों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती ही जाती है, साथ ही रोग और रोगियों की। बहुत-से लोगों का आमदनी का अधिकांश भाग डाक्टरों की जेबों में चला जाता है। जरा-सा जुकाम हुआ कि डाक्टर के पास भागे गये, पेट में जरा दर्द हुआ कि दवा आई। ऐसा प्रतीत होता है, मानों डाक्टर शहरी जीवन के अभिन्न अंग बन गये हैं लोगों से कभी चर्चा होती है तो मजाक उड़ाते हुये कहते हैं—"अजी कहीं मिट्टी पानी वगैरह से रोग दूर होते हैं?" वर्षों अप्राकृतिक रहन-सहन में मिट्टी, पानी आदि को भूल जाना स्वाभाविक ही है; लेकिन लोगों को इतना स्मरण रखना चाहिए कि जब तक वे प्रकृति को अपना चिकित्सक नहीं बनावेंगे और उसके आदेश पर नहीं चलेंगे तब तक सच्चा स्वास्थ्य और सार्थक जीवन मिल नहीं सकता।

हमारे जैसे निर्धन देश में आरोग्य साधन के लिए प्राकृतिक चिकित्सा ही सर्वोत्तम चिकित्सा-प्रणाली है। प्राकृतिक चिकित्सा यानी प्राकृतिक रहन-सहन और रोग होने पर प्रकृति की सहायता से ही रोग का निवारण। प्राकृतिक रहन-सहन के लिये संयम की आवश्यकता होती है और रोग-निवारण के लिये मिट्टी-पानी आदि के उपचार के साथ-साथ आत्म-विश्वास और ईश्वर पर निष्ठा की। ऐसा जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति स्वस्थ रहकर अपना भला तो करता ही है, आज की भारग्रस्त दुनिया का भी बोझ हलका करता है।

मिट्टी, पानी आदि के उपचार हमारी पहुँच से बाहर नहीं हैं; कारण कि हमारे दैनिक जीवन में उनसे निकट का सम्बन्ध रहता है। यह निश्चय ही बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हम उसके गुणों को भूल गये हैं और उनसे हमारा नाता टूट गया है! यदि वह नाता पुनः जुड़ जाय तो न केवल हमारा खोया स्वास्थ्य ही मिलेगा, अपितु हमारी वर्तमान उलझनें भी बहुत कुछ अंश में दूर हो जायेंगी। पुराने अथवा जटिल रोगों की अनुभवी निसर्गोपचारकों की देख-रेख में चिकित्सा की जा सकती है; लेकिन साधारण रोगों में तो किसी के भी मार्ग दर्शन की आवश्यकता नहीं है। ●

बालक गणितज्ञ गौस

गौस, जर्मनी का महान् गणितज्ञ, अभी सात वर्ष का ही बालक था; किन्तु उसकी विलक्षण प्रतिभा से सभी आश्चर्य-चकित थे। गौस का गणित का अध्यापक तो मन ही मन उससे ईर्ष्या करता था; क्योंकि वह बहुधा यह अनुभव करता था कि यह छोटा छोकरा गणित में जितना जानता है उतना वह भी नहीं जानता।

एक दिन अध्यापक ने श्यामपट पर एक प्रश्न लिखा। "एक से लेकर सौ तक सभी अंकों का जोड़ निकालो।"

कक्षा के सभी बालक स्लेट पर सवाल निकालने के लिए बड़ी तेजी से एक से सौ तक की गिनती लिखने लगे; लेकिन गौस ने कुछ सैकिंड बाद ही अपना हाथ उठाते हुए कहा, "मैंने प्रश्न कर लिया," अध्यापक ने उसे तुरंत आगे आने को कहा किन्तु गौस के सही उत्तर को देख कर वह चकित रह गया।

इतने बड़े प्रश्न को कुछ सैकिंड में ही उसने कैसे लगा लिया? इस प्रश्न पर विचार करते हुए गौस के मस्तिष्क में तुरन्त एक बात आई कि १ से लेकर १०० तक के सभी अंकों के जोड़े इस प्रकार बनाये जा सकते हैं: १ और १००, २ और ९९, ३ और ९८, ४ और ९७, इत्यादि, और इनमें से प्रत्येक जोड़े का योग १०१ होता है। और इस प्रकार के जोड़ों की कुल संख्या चूँकि ५० है, इसलिए यह प्रश्न एक साधारण गुणा का प्रश्न रह जाता है, अर्थात् ५०×१०१=५०५०। ●

अधिक से अधिक सत्यार्थ—प्रकाश बाँटिए।

(पृष्ठ २२ का शेष)

मानव की आज तक की प्रगति, सामाजिक सांस्कृतिक प्रगति बलोपासना, आक्रमक वृत्ति और स्वामित्व भावना की मूल प्रवृत्तियों के कारण हुई है। भविष्य में भी इनके ही द्वारा होगी। मानव बदला नहीं है। अतः इनको काल बाह्य मानकर छोड़ देने की गलती नहीं की जा सकती। आज मानव समाज जिस उन्नतावस्था में हैं वहाँ वह पौरुष युयुत्सु वृत्ति पराक्रम, स्वामित्व भावना की मूल नैसर्गिक प्रवृत्तियों और भावनाओं के बल पर पहुंचा है। इस दृष्टि से पांच हजार साल पहले भगवान श्रीकृष्ण ने जिस त्रिकालाबाधित सत्य की कुरुक्षेत्र के मैदान में घोषणा की थी कि 'बलं बाणवतां चाहम्' वह आज भी सत्य है। क्या १९७६ का भारत इस सत्य के दर्शन कर सकेगा? ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

घर-परिवार

—रामनिवास

एक बोध कथा

संगठन शक्ति

●●●

एक बार की बात है कि शरीर के चार प्रमुख अंगों अर्थात् सिर, हाथ, पेट और पैरों में आपस में ठन गई। वे लगे एक दूसरे की निन्दा करने। सर्वाधिक आक्रोश पेट पर उतारा गया। अन्य तीन अंगों ने शिकायत भरी मुद्रा में कहा—"हम तो काम करते-करते थक जाते हैं, किन्तु एक तुम हो कि आनन्द से गुलछर्रे उड़ाते हो और बिना कुछ करे-धरे मौज करते हो।"

और फिर सिर कुछ और भभका और बोला—"मैं अच्छे-अच्छे सुझाव देता हूं, नित्य प्रति आने वाली उलझनों का समाधान खोजता हूं। हाथ भी बेचारे दिन-भर कार्य करते हैं और उन्हें घड़ी भर भी चैन नहीं मिलता और ये बेचारे पैर चलते-चलते शरीर का भार ढोते-ढोते थककर निढाल तथा बेहाल हो जाते हैं और ये श्रीमान उदर (पेट) जी महाराज न कुछ करना न धरना मस्ती मारते हैं और चैन की बंसी बजाते हैं।"

पेट ने उसकी यह भड़ास सुनी तो कहने लगा—"बंधुओ, ऐसा प्रतीत होता है वस्तुतः मैं भी आप सबकी कुछ कम सेवा तो नहीं करता। ऐसी आलोचना प्रत्यालोचन से हम सभी का अहित ही होगा। प्रत्येक बात को भलीभांति सोच-विचार कर कहनी ही अच्छी होती है। मैं भी तो रात-दिन उसे पचाता हूं जो आप मुझे प्रदान करते हैं। और फिर उसे पचाकर सभी अंगों को प्रदान करता हूं, आवश्यकता के अनुसार वितरित करता हूं और कुछ अंश को भविष्य-निधि के रूप में एकत्र भी करता हूं और फिर आपत्तिकाल में उसका बिना किसी भेदभाव के सभी के लिए उपयोग होता है।"

इस समुचित उत्तर पर भी स्वार्थ के चश्मे से निहार रहे हाथ, पैर और सिर का समाधान न हुआ। उन्होंने पेट को पापी और न जाने क्या-क्या उपाधियां दे डालीं। इसी वाक्युद्ध में काफी समय व्यतीत हो गया। और फिर धीरे-धीरे दिन चढ़ने लगा। लगे कुलकुलाने। सिर भी चकराने लगा तो हाथ और पैर भी लगे लड़खड़ाने। परिणामस्वरूप शरीर के प्रत्येक अंग में व्याकुलता बढ़ गई।

अन्त में पेट बेचारे से न ही रहा गया और उसने उन सभी को नम्र शब्दों में फटकारते देकर कहा कि तुम सभी अपने-अपने काम में लग जाओगे तो ही इस विपदा से मुक्ति पाओगे।

सिर, हाथ और पैर बेचारे करते भी तो क्या करते। लाचार होकर उन्हें अपने-अपने कार्य में लिप्त होना पड़ा और फिर सभी अंगों की व्याधि शांत हो पाई।

वस्तुतः संगठन ही शक्ति है, उसीसे शरीर सुचारू ढंग से कार्य कर पाता है और इसी भांति समाज के सभी वर्गों द्वारा अपने-अपने कर्तव्य का पालन करने से ही समाज और राष्ट्र बलशाली, सबल तथा सुदृढ़ हो जाता है। असहयोग नहीं सहकार भेदभाव नहीं अपितु स्वकर्तव्य पूर्ति ही सफलता की कुञ्जी है।

निर्माण करो !

नव-भारत निर्माण करो, हे !
नवयुग का आह्वान करो, हे !

टूट गई निर्मम हथकड़ियां,
फिर कैसी आँसू की लड़ियां,
नवयुग में नत-शीश रहो मत,

रुदन नहीं, जयगान करो, हे !
नव-भारत निर्माण करो, हे !

मुक्त पवन, बादल मतवाले,
उजड़े खेत करो हरियाले,
राम, कृष्ण, गौतम की प्यारी,

धरती का सम्मान करो, हे !
नव-भारत निर्माण करो, हे !

गुणवानो ! गुण-दान करो तुम,
धनवानो ! धन-दान करो तुम,
स्वस्थ तरुण ! अंगड़ाई लेकर,

उठो-उठो, श्रम-दान करो हे !
नव-भारत निर्माण करो हे !

भावी सदियां झाँक रही हैं,
मोल तुम्हारा आँक रही हैं,
समय किसी के लिए न रुकता,

रथ अपना गतिवान करो हे !
नव-भारत निर्माण करो हे !

—श्रीरामकुमार 'चंचल'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक निरर्थक मानसिक व्यायाम

सत्य है कि भारत के इतिहास के अनेक स्वर्णिम पृष्ठों पर अभी भी विस्मृति का गहन पटल पड़ा हुआ है। आर्यावर्त्त के प्रेरणादायक इतिहास के अनेक उज्जवल पृष्ठ अभी जन साधारण के समक्ष नहीं आ पाए हैं। प्राचीन इतिहास के सम्बन्ध में शोध-कार्य की आवश्यकता को अस्वीकार भी नहीं किया जा सका। किन्तु इस शोध की प्रक्रिया में अपने इतिहास के उन महापुरुषों के अस्तित्व पर ही शंका-कुशंकाओं को उभारना इस देश की महान् संस्कृति के प्रति उपकार नहीं अपितु कोरा बौद्धिक चमत्कार और निरर्थक मानसिक व्यायाम ही कहा जा सकता है, जो सहस्रों वर्षों से वैदिक संस्कृति के मान-बिन्दु एवं प्रेरणा-स्रोत बने हुए हैं।

शोध के नाम पर ऐसा ही मानसिक व्यायाम अब देश के एक ख्यातिनामा वयोवृद्ध प्राध्यापक श्री सुनीति कुमार चटर्जी ने किया प्रतीत होता है। उन्होंने अपनी इस नई खोज से भारतवासियों को चमत्कृत करने का उपक्रम किया है कि रामायण तो मात्र एक उपन्यास है और उसकी कथावस्तु बौद्ध जातक कथाओं से ली गई है।

विश्व के आदि कवि वाल्मीकि जिस रामायण के रचयिता हैं और उन्होंने भारत के प्रेरणा पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का अपने इस महान् ग्रन्थ में चरित्र चित्रण किया है, उस ग्रन्थ को जातक कथाओं से प्रेरित बताना एक बड़े आदमी की छोटी बात ही कहा जा सकता है।

अयोध्या एवम् लक्ष्मणपुर (लखनऊ) तथा जनकपुर के नाम विद्यमान नगरियों के कण-कण में जिस महापुरुष का इतिहास रमा है, सरयू की नीलधारा जिसके निर्मल चरित्र की साक्षी आज भी अपनी लहरों से प्रदान कर रही है, सेतु-बन्ध रामेश्वरम् जिसके महान अभियन्ताओं की यशगाथा गा रहा है और जिसका गौरव गान भारत ही नहीं अपितु दिग्दिगन्त में व्याप्त है, उसके अस्तित्व पर भी शंका के सघन घन फहराने का यह उपक्रम चमत्कार तो कहा जा सकता है किन्तु भारतीय इतिहास के शोध का पुरस्कार कदापि नहीं कहा जा सकता।

उनके पूर्व भी कतिपय 'इतिहासकारों' ने महाभारत के बाद रामायण का तराना छेड़ा था और कई ने कृष्ण के बाद राम की कहानी गाई थी किन्तु श्री सुनीतिकुमार चटर्जी तो उन सभी से बाजी ले गये प्रतीत होते हैं।

आर्य जगत के मनस्वी विद्वानों के लिए इस प्रकार के 'शोधों' का प्रतिरोध और समुचित तर्क संगत उत्तर दिया जाना अपेक्षित ही नहीं अपितु अनिवार्य भी है। क्योंकि ऐतिहासिक शोध कार्य के नाम पर इस प्रकार की बौद्धिकता को बिना चुनौती के चलने दिया गया तो कल को कोई अशोक, गौतम, शिवाजी, प्रताप और देव दयानन्द के अस्तित्व पर शंका की शोध का चमत्कार प्रदर्शित कर सकता है।

अतएव आर्यसमाज के अध्येता विद्वानों का यह कर्त्तव्य है कि वे इस प्रकार की अनोखी स्थापनाओं का सारपूर्ण एवम् तर्क संगत उत्तर देकर जनसाधारण में भ्रान्तियों का सृजन होने से रोकें। क्योंकि यदि इस ओर दुर्लक्ष्य किया गया तो इस प्रकार के अनेक रोमांचक अन्वेषण आरम्भ हो सकते हैं और उनके परिणामस्वरूप जनसाधारण में विद्यमान वह आस्था डगमगा सकती है जिसके सहारे इस महान् जाति ने सहस्रों वर्षों तक दासता की शृंखला में आबद्ध रहने पर भी अपने अस्तित्व को अक्षुण रखने में सफलता अर्जित की और प्रत्येक प्रकार के दमन, अन्याय और अत्याचार के प्रबल प्रभंजन की चुनौती को सफलतापूर्वक झेला और स्वातन्त्र्य की यज्ञाग्नि को प्रज्वलित रखा तथा अन्ततोगत्वा पराधीनता के पाश को छिन्न-विच्छिन्न कर अपनी पुण्य—भूमि को स्वतन्त्र कराने की साध पूर्ण की।

तीन सूत्र ?

किमगाधं जलधेरपि खलचरितं शब्दविद्या च।
क्व खलु विधेयो वासः सज्जननिकटेऽथवा काश्याम्॥

प्रश्न—समुद्र से भी अथाह क्या चीज है ?

उत्तर—दुर्जनों का दुश्चरित और व्याकरण-विद्या।

प्रश्न—मनुष्य को रहना कहाँ चाहिए ?

उत्तर—सज्जनों के सन्निकट अथवा काशी में।

इह भुवने कः शोच्यः सत्यपि विभवे न यो दाता।
किं लघुताया मूलं प्राकृतपुरुषेषु यत्कृतं पापम्॥

प्रश्न—संसार में सबसे दयनीय कौन है ?

उत्तर—धनवान होकर भी जो कंजूस है।

प्रश्न—मनुष्य की सबसे बड़ी नीचता क्या है ?

उत्तर—सर्वसाधारण के प्रति उसके द्वारा किया गया पाप।

—महाकवि विद्यापति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहानी

सबसे बड़ा "धन"

मैं आफिस जा रहा था, कि एक जगह तम्बू इत्यादि लगे दिखाई दिये। कुछ लोग आम के पत्तों और पत्तियों से फाटक बना रहे थे। मैंने एक आदमी से पूछा—"क्या होगा यहां भाई ?"

"पादरी साहब का व्याख्यान" सोचते हुए उसने उत्तर दिया। यह हरिजनों की बस्ती थी, दो-चार अन्य जाति के लोग भी थे। ऐसी बस्ती में पादरी साहब का आना मुझे आश्चर्य-जनक नहीं लगा, प्रायः ऐसी ही गरीब बस्तियों में यह पादरी अपना उल्लू सीधा करते हैं। पढ़े-लिखे लोगों से बोलने की हिम्मत इनकी होती नहीं, गरीब और अभावग्रस्त जनता को लालच देकर धर्मभ्रष्ट कर देते हैं। अंधे को चाहिये दो आँख, वे बेचारे सहज ही इनकी ओर खिंच आते हैं। विचारों में मग्न मैं आफिस पहुंच गया, और कार्य में तन्मय हो सब भूल गया।

टन-टन-टन घडी ने तीन बजाये। मैं साइकिल उठाकर घर चला। यह भीड़ कैसी खड़ी है मुझे साइकिल रोकनी पड़ी, भीड़ में झांक कर देखा तो जगदम्बा देवी के मन्दिर के पुजारी बबुआ को गाली दे रहे थे साथ ही जोर-जोर से चिल्ला रहे थे।

"चमार कहीं का, कुयें पर चढ़ गया, जानता नहीं यहां से मन्दिर में पानी जाता है, सब भ्रष्ट कर दिया, जरा हौसले तो देखो, धरम-करम समझते ही नहीं।"

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि यह वही पण्डितजी थे जिनका लड़का मिशन स्कूल में पढ़ता है, जिसे पादरियों ने "मिड डे मील' के बहाने अण्डा इत्यादि अभक्ष्य खिला कर भ्रष्ट कर दिया है। यही नहीं, भारतीय सभ्यता से घृणा करना भी सिखाया है। और हां, उस दिन "गार्जियन्स मीटिंग" जो स्कूल में हुई थी वहां इन पण्डित जी ने स्टीवेन्सन साहब प्रिंसिपल के साथ चाय पी थी, यह चाय उन ईसाईयों ने जो पहले योरपीय देशों में भंगी, चाण्डाल इत्यादि थे, बनाई थी। और साथ ही यह ईसाई भक्ष्याभक्ष्य का ध्यान भी नहीं रखते। क्या पण्डित जी और उनका लड़का धर्मभ्रष्ट नहीं है ? मांसभक्षी ईसाईयों के हाथ का खा लेना पण्डित जी को स्वीकार है, परन्तु आज बबुआ के कुयें पर चढ़ जाने भर से कुंआ भ्रष्ट हो गया। वाह रे ढोंगी ! पैसे के गुलाम ! और पण्डित जी के बहुरुपियापन पर मुझे हंसी आ गई।

शाम को मैंने सोचा चलो मैं भी पादरी साहब की बात सुनूं, और जहां तक हो जनता को उनके चंगुल में फंसने से बचाऊं। मार्ग में देवेन्द्र और बबुआ, (वही देवेन्द्र जो ईसाईयों के विरोध में दिन-रात जुटा रहता है) बात करते जा रहे थे।

"बाबू जी, मैं तो ईसाई हो जाऊंगा" बबुआ खिन्न मन से बोला, "क्यों भाई ?" देवेन्द्र चौंका।

"क्या करें बाबू जी, जिधर जाता हूं ठुकरा दिया जाता हूं, ईसाईयों की इज्जत तो होती है, देखा, आज जरा सी बात पर पण्डित जी मुझ पर कैसे लाल-पीले हो रहे थे, और फिर मैंने सुना है ईसाई हो जाने पर पादरी लोग धन देते हैं, मुफ्त दवा देते हैं, बच्चों को स्कूल में पढ़ाते हैं, उदास मुख से बबुआ बोला।

"बेशक वह इतना करते हैं, परन्तु इस जरा से साधन को देकर वे तुम्हारा सबसे बड़ा धन लूट लेते हैं" दृढ़ होकर देवेन्द्र बोला "कौन सा धन" बबुआ आश्चर्यान्वित हो उठा।

"वह धन जिसकी रक्षा राम और कृष्ण ने की, जिस धन की रक्षा में गुरु गोविन्दसिंह और उनके वीर पुत्रों ने प्राण दिये। लाखों आर्यों, शिवा जी, प्रताप और रमणियों ने जिसकी रक्षा की, वही धन आज वे सब तुमको दे गए हैं उसकी रक्षा करना तुम्हारा कर्तव्य है, जानते हो वह कौन सा धन है ? चन्द ढोंगी और पाखण्डी यदि तुम्हें ठुकराते हैं तो क्या, बाकी तुम्हारी इज्जत भी करते हैं। वह दिन दूर नहीं जब यह पण्डित उलटे ठुकराये जायेंगे" कहते-कहते देवेन्द्र का चेहरा अभिमान से लाल हो उठा।

"जानता हूं बाबू जी, धर्म ही सबसे बड़ा धन है, मैं ·· मैं ·· उसे ·· न ·· नहीं छोड़ सकता, मैं अभी जा ··· जाकर मोहल्ले वालों को स समझाता हूं।" और वह तेजी से चल दिया।

तभी देवेन्द्र ने मुझे देखा, "आइए आर्य जी नमस्ते।"

"नमस्ते, मैं सब बात सुन रहा था, इसीलिए बीच में खलल नहीं डाला" मैंने कहा। 'आइए भंगी बस्ती में चलें यहां तो बबुआ सम्हाल लेगा।" वह कहता हुआ मुस्कराता एक तरफ को चल दिया। और जब हम लौट कर आए तो देखा कि बबुआ के मोहल्ले के लोग चिल्ला-चिल्ला कर पादरी साहब को "लौटो, लौट जाओ" के नारे लगा रहे थे, और पादरी साहब मुंह लटकाये लौट रहे थे, तम्बू-सम्बू उखाड़ कर फेंक दिए गए थे। देखते ही देवेन्द्र ने बबुआ को छाती से लगा लिया "शाबाश बबुआ" वह चिल्लाया, और छोटा सा एक भाषण देकर दूसरे मोहल्ले में ईसाईयों से मोर्चा लेने चल पड़ा।

आज देश को लाखों देवेन्द्र सरीखे युवकों की आवश्यकता है। मैंने सोचा देखें कितने देवेन्द्र सामने आते हैं।

●●●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—दिव्या

शिशु संसद्

चालाकी कछुए की

बात तो है पुरानी। एक था बंदर और एक कछुआ। दोनों में थी बड़ी गहरी मित्रता। वे दोनों ही प्रायः साथ-साथ रहते थे। एक-दूसरे से अपनी समस्याएं भी कहते थे। किन्तु बंदर तो था बंदर ही चालाक और चुस्त और कछुआ बेचारा था तो मंद गति से चलने वाला और सुस्त। किन्तु परमात्मा ने बुद्धि तो उसे भी प्रदान की ही थी। उसका उपयोग भी वह समय आने पर खूब करता था।

एक दिन ऐसा हुआ कि कछुआ और बंदर दोनों ही पहुंचे एक नदी के किनारे। उन्होंने देखा कि नदी की धारा में एक केले का पेड़ बहकर आ रहा है। दोनों का ही मन ललचाया और उन्होंने उसे पकड़ने के लिए दाव लगाया और यह तय पाया कि दोनों इसे आधा-आधा बांट लेंगे। पेड़ नदी से निकाल लाया गया। अब आई उसके बंटवारे की बारी। चालाक बन्दर ने पेड़ का ऊपर का हिस्सा झटक लिया और जड़ वाला भाग बेचारे कछुए के सामने पटक दिया।

कछुआ रह गया मन मारे किन्तु करता भी तो क्या बंदर से तो उसके पेश नहीं चल सकती थी। अतः उसने केले के पेड़ की जड़ को लेकर ही संतोष कर लिया। उसने उस जड़ को जमाया और उसके चारों ओर मिट्टी का थडा लगाया और उसे पानी से सींचने और बढ़ाने लगा।

धीरे-धीरे वह पेड़ होता गया बड़ा। उसमें कोंपले फूटीं, फिर पत्ते लहलहाए और समय पर मधुर कदली फल भी आए।

जिन दिनों केले के पेड़ पर फल लदे हुए थे। एक दिन उस कछुए का पुराना मित्र वही बंदर पुनः आया और उसने कछुए के द्वारा लगाए गए पेड़ की प्रशंसा के पुल बांध दिए। कछुआ बंदर की चालाकी तो समझ गया, किन्तु उसकी अपनी भी मजबूरी थी। अतएव सुनता रहा और मन ही मन कुढ़ता भी गया। बंदर ने कहा कि भाई तनिक तुम्हारे फलों को ऊपर चढ़ कर ही निहार लूं। कछुए ने मन मार कर कह दिया, हाँ, हाँ, क्यों नहीं?

और बंदर बड़ी तेजी से वृक्ष पर जा चढ़ा। कछुआ भी था चालाक वह वृक्ष की जड़ के आस पास कांटे बिखरेता गया। उसने आस पास की सारी धरती पर कांटे छितरा दिए। इसके बाद वह बंदर जब फल इत्यादि खाकर नीचे उतरने ही को था तो कछुआ धीरे-धीरे चला और एक नारियल के खोल में जाकर छिप गया। उसमें उसने छोटा सा सुराख भी कर लिया था।

बन्दर महोदय अपनी चालाकी पर इतराते हुए पेड़ से नीचे उतरे तो कांटों में फंस गए। उनके पावों में कांटे लगे तो पूंछ भी कांटों में भर गई। वेदना से कराहते और कछुए पर क्रोध से भभकते-भभकाते बंदर महोदय ने ज्यों-त्यों कर जब कांटों से छिदे अपने शरीर के लिए राह बनाई तो उनकी दृष्टि नारियल पर जा पड़ी। वह जाकर उसी नारियल पर बैठ गया। तभी कछुए ने अपनी चाल दिखाई और बंदर महोदय की दुम में काट लिया। बंदर भडका और चीखा "अच्छा तो शैतान तुम यहां छिपे बैठे हो।"

यह कहते हुए उसने नारियल को हाथ में उठाया और नदी में फेंक दिया। नारियल के साथ ही साथ कछुआ भी नदी में चला गया। और फिर उसने पानी से अपना सिर बाहर निकाला और बोल उठा: मित्र तुम्हारा धन्यवाद। अच्छा ही किया कि तुमने मुझे मेरे स्थान पर पहुंचा दिया। किन्तु अब तुम तनिक घाव सहलाओ और अपने मित्र-दोह का परिणाम अच्छी प्रकार से पाओ।

★

खुदा सिख हो गया है!

श्री महाराजा रंजीतसिंह जी के प्रधान सेनापति सरदार हरिसिंह नलवे की सेनाओं ने भारतीय शूरवीरों की वीरता की धाक जमा दी। पठान हरिसिंह नलवे का नाम सुन कर ही चौंकने और भय से कांपने लगे। पठान स्त्रियाँ रोते हुये बच्चों को चुप करने के लिए कहतीं—"चुप-चुप, नहीं तो नलवा आ जायेगा।"

पठान युवकों की एक मण्डली ने सरदार हरिसिंह नलवे के विरुद्ध एक षड़यन्त्र रचा। उन्होंने सहायता के लिए एक वृद्ध पठान को पत्र लिखा। उसमें लिखा था—"हमने हरिसिंह नलवे को समाप्त करने का आयोजन किया है। आओ, तुम भी हमारे साथ शामिल हो जाओ। इत्यादि"—

बूढ़ा जानता था कि उस महावीर के सामने इनका यत्न बच्चों का खेल है। उत्तर में उसने लिखा—"आप के पत्र से मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। आपने बहुत अच्छा उपाय सोचा है। मैं केवल इतना ही कहता हूं कि यदि तुम्हारे अन्दर ताकत हो, तो कदम आगे बढ़ाना। खुदा पर कुछ भी भरोसा न करना। क्योंकि खुदा तो आज-कल सिख हो गया है।

—श्री यादवेन्द्र सिंह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—सुशीला

घर संसार

तिल के स्वादिष्ट व्यंजन

देखेंगे तो आप भी कहेंगे यह है क्या नन्हा-सा तिल। किन्तु यह है कितना महत्वपूर्ण, इसकी जानकारी आपको महाराष्ट्र की गृहणियों से भलीभांति मिल सकती है। वहां देवियां घरों में तिल के स्वादिष्ट व्यंजन बनाती हैं उनका तो यह भी अनुभव है कि तिल मिले पानी को पीने एवं उससे स्नान करने तथा तिल का उबटन लगाने से स्वास्थ्य सुधरता है भी और सौन्दर्य भी निखरता है। तिल का होम करने से भी आप अपरिचित न होंगी। जाड़े के इस मौसम में आपके घर में जब कोई महमान आए तो तनिक आप तिल से बनाए जाने वाले निम्नलिखित व्यंजनों का चमत्कार भी परखिए। मेहमान ये व्यंजन खाएगा तो आपकी प्रशंसा के पुल भी बांधता जाएगा।

गुड़ की रोटी

यह भी तिल से तैयार की जाने वाली रोटी है। इसके लिए आवश्यक सामग्री है—१ किलो गुड़, १०० ग्राम बेसन, 1 किलो आटा, 100 ग्राम शुद्ध मूंगफली का तेल एवं २०० ग्राम साफ धुले हुए तिल।

विधि

इसे तैयार करने के लिए सर्वप्रथम गुड़ को कद्दूकस या किसनी पर महीन-महीन कसें, जिससे उसमें गोली न रहने पाए, क्योंकि यदि गोली रह जाएगी तो बेलते समय रोटी फट जाएगी। अतएव गुड़ को कसकर उसे हाथ से खूब मुलायम कर लें और फिर उसमें भुना हुआ तिल कूटकर मिला लें। तदुपरान्त बेसन भी सुरख भूनें और मिला लें। बस अब हो गया गुड़ तैयार। अब आप आटे की छलनी में उसे महीन-महीन छानकर उसमें मूंगफली के तेल का मोयन डालें, फिर उसे थोड़ा गूंथ लें। यह पूड़ी के आटे से भी कड़ा होना चाहिए। अब जितनी लोई पूड़ी बनाने के लिए ली जाती है, उतनी ले लें। पहले उसे हाथ से चपटी करें और फिर उसके बीच में गुड़ की एक लोई उसी अनुपात से ले लें। अन्दाज यह रहना चाहिए कि एक भाग गुड़ हो तो दो भाग आटा होना चाहिए। अब दो आटे की लोइयों के बीच में गुड़ की लोई रखकर दोनों ओर से किनारे भलीभांति दबा लें, जिससे कि गुड़ बाहर न निकल सके। यदि पलोथन की जगह चावल के आटे का उपयोग किया जाए तो अत्युत्तम है। परन्तु न होने पर गेहूं के आटे का भी उपयोग किया जा सकता है। फिर धीरे-धीरे जितना महीन बेल सकते हैं, बेल लें। फिर तवे पर धीमी आंच से उसे सेकें। यह रोटी केवल तवे पर ही सेकी जाती है, सीधे चूल्हे पर नहीं। चिमटे का उपयोग न किया जाए। उसे ठंडी हो जाने पर शुद्ध घी के साथ खाएं। फिर वह क्या स्वाद प्रदान करती है, यह बताने की नहीं, अनुभव करने की बात है।

तिल की बर्फी

तिल की बर्फी भी नितान्त स्वादिष्ट एवं रुचिकर होती है। इसको तैयार करने की विधि निम्नलिखित है—

सामग्री :

धुले हुए तिल 250 ग्राम, चीनी 500 ग्राम, भुनी हुई मूंगफली का चूरा 100 ग्राम, इलायची छोटी 10 तथा सूखे नारियल का थोड़ा-सा चूरा।

विधि :

सर्वप्रथम धुले हुए तिलों को लीजिए और उन्हें कढ़ाई में भून लीजिए। किन्तु उन्हें अधिक काला न पड़ने दें। इसके पश्चात् जब ये तिल कुछ ठंडे हो जाएं तो इन्हें कूट लीजिए। भुनी हुई मूंगफली भी कूटकर तैयार रखी जाए। अब चीनी की चाशनी बनाइए और पक्का पाक हो जाने पर कुटा हुआ तिल और मूंगफली का चूरा मिला लीजिए। फिर छोटी इलायची भी पीसकर मिला लीजिए। जब तनिक गाढ़ा हो जाए तो उसे थाली में जमा लें। ऊपर से कसे हुए सूखे नारियल का चूरा उस पर बुरक दें। इसके दो घंटे बाद ही स्वादिष्ट बर्फी जमकर तैयार हो जाएगी। अब उसके टुकड़े काटिए। प्लेट में सजाइए और प्रेम सहित स्वयं खाइए तथा अपने अतिथियों को खिलाइए। ★

जीवन मरण

हमें प्यारो प्यारा ऋषि का मिशन है।
यही आन अपनी व जीवन मरण है॥
कदापि इसे हम नहीं भूल सकते।
इसी प्राणधन के लिए अपना तन है॥
बिना इसके संसार नीरस है लगता।
यह सर्वस्व अपना यह आशा का पवन है॥
सहेंगे सभी कष्ट इसके लिए हम।
दिखाएंगे हम, हम में कैसी लगन है॥
पदों के प्रलोभन नहीं जानता वह।
जो कर्त्तव्य पालन में रहता मगन है॥
वह बेचैन है चैन पाता इसी में।
लगी जिस किसी को भी इसकी लगन है॥
उजाड़ों न ऐ लीडरो ! वाटिका यह।
डरो, ईश से यह भयङ्कर पतन है॥

राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—मा० ए० सूद

विज्ञान वार्ता

करोड़ों के लिए पेय जल

वह समय सम्भवतः बहुत दूर नहीं, जब नालों में बहने वाला गन्दा पानी इस प्रकार शुद्ध और स्वच्छ कर लिया जाये कि उसका प्रयोग फिर पीने के लिए किया जा सके। अमेरिका एवम् कई अन्य देशों के वैज्ञानिक एक ऐसी जल-शुद्धिकरण प्रणाली विकसित कर रहे है, जिसके द्वारा गन्दे नालों के पानी को भी पीने के योग्य शुद्ध बनाया जा सकेगा।

यह रहस्योद्घाटन अमेरीकी आन्तरिक विभाग के डा० विलियम एस० बूचर ने हाल में नई दिल्ली में एक भेंट-वार्ता के दौरान किया। डा० बूचर पिछले महीने नयी दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय जल-साधन संघ द्वारा आयोजित जल-साधन सम्बन्धी द्वितीय विश्व सम्मेलन के उपाध्यक्षों में से एक थे। इस गैर-सरकारी सम्मेलन में ४० देशों से आये ६०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इस चतुर्दिवसीय सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य इस समय विश्व में उपलब्ध सर्वश्रेष्ठ अनुभव और प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके जल-साधनों के व्यवस्थित विकास, प्रबन्ध और उपयोग के लिए मार्ग-निर्देशक विधान तैयार करने में सहायता देना था। सम्मेलन में अनेक निबन्ध पढ़े गये। इन निबन्धों से ऐसी धारणाओं, कल्पनाओं और विधि-व्यवस्थाओं का आविर्भाव हुआ, जो विकसित और अल्प-विकसित, सभी देशों द्वारा अपने जल-साधनों के विकास के लिए तैयार किये गये कार्यक्रमों में अतीव उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।

सभी राष्ट्रों के समक्ष किसी न किसी अंश तक पानी के अभाव तथा जल-प्रदूषण की समस्याएं उपस्थित हैं। उनमें से कई इन समस्याओं का सामना करने का प्रयत्न कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, भारत विकसित राष्ट्रों की तकनीकों और अनुभवों से लाभ उठा रहा है और उनकी भूलों से बचने का प्रयत्न कर रहा है। इस दृष्टि से, पानी को दूषित होने से बचाने के लिए कीट-नियंत्रक रसायनों के प्रयोग और उद्योगों तथा शहरों के उच्छिष्ट पदार्थों को निरापद ढंग पर ठिकाने लगाने या शुद्ध करने में दिखलायी जा रही सकर्मता विशेषतः महत्वपूर्ण है।

अमेरिका भी अपने यहां जल की किस्म सुधारने के लिए जल सम्बन्धी अनुसंधान में अनेक वर्षों से सक्रिय रूप में संलग्न है। डा० बूचर के अनुसार, जल-साधनों के विकास के मामले में अमेरिका मुख्य रूप से इस बात पर बल दे रहा है कि ऐसे कारखाने बनाये जायें जो गन्दे नालों के पानी को शुद्ध करके पीने योग्य बना सकें। देश भर में इस तरह के कई कारखाने चालू हैं, और उनके निर्माण और रख-रखाव पर हर साल करोड़ों डालर व्यय होते हैं।

उदाहरणार्थ न्यूयार्क नगर में गन्दे जल को शुद्ध करने के लिए स्थापित एक संयंत्र में, बिजली से घूमने वाले विशाल कड़ाहों का प्रयोग करके गन्दा पानी शुद्ध किया जाता है। प्रत्येक कड़ाहे के ऊपर ऐसे कीटाणुओं का समुदाय उत्पन्न हो जाता है, जो पानी के अशुद्ध तत्वों को आत्मसात कर लेते हैं। जैसे-जैसे पानी इन कड़ाहों से होकर आगे बढ़ता जाता है, वैसे-ही-वैसे विभिन्न प्रकार के अशुद्ध तत्व उससे छंटते जाते हैं और अन्त में चलकर पानी पूर्ण रूप से शुद्ध हो जाता है। जल की अन्तिम जांच के लिए पानी को एक सक्रिय कार्बन फिल्टर या छन्नी से होकर बहाया जाता हैं, जो पानी में शेष बच रहे जैव पदार्थों और रंग को उससे पृथक कर देती है।

इस प्रकार शुद्ध किये गये जल को नदियों और जलाशयों में छोड़ दिया जाता है। इससे इन नदियों या जलाशयों का पानी गन्दा नहीं होने पाता। भविष्य में, जब पेय जल की मांग बहुत बढ़ जायेगी, इस प्रकार के पानी को शुद्ध करने के तत्काल बाद बगैर किसी हानि के प्रयुक्त किया जा सकेगा।

पश्चिमी अमेरीका में जो सिंचाई योजनाएं चालू हैं, उनके कारण नालों द्वारा नदियों में काफी मात्रा में नमकीन पानी पहुंचने लगा है। मैक्सिको द्वारा की गयी शिकायत पर, जहां इस प्रकार का लवणयुक्त पानी बहकर जाता है, अमेरीका ने १३ करोड़ डालर की लागत से अमेरीका मैक्सिको सीमा पर यूमा निक्षारीकरण संयंत्र बनाने का निर्णय लिया है। यह संयंत्र १९८० के दशाब्द के मध्य में चालू हो जायेगा।

अमेरिका के समक्ष जलाभाव की पुरानी या तात्कालिक कोई समस्या नहीं है। किन्तु वहां तथा अन्यत्र पानी की बढ़ती हुई मांग की पृष्ठभूमि में, किसी भी समय उससे निबटने के लिए तत्पर रहने के उद्देश्य से अनुसन्धान निरन्तर जारी है। पानी के विकास सम्बन्धी दीर्घकालीन योजनाओं में, समुद्र के खारे पानी के निक्षारीकरण तथा मौसम पर नियन्त्रण की परियोजनाएं शामिल हैं।

विश्व का लगभग ९७ प्रतिशत पानी महासागरों में पाया जाता है। सदियों से मनुष्य समुद्र के खारे पानी को शुद्ध पेय जल में परिवर्तित करने के स्वप्न देखता आ रहा है। निक्षारीकरण सम्बन्धी प्रारम्भिक विधियां प्रायः व्ययसाध्य रहीं क्योंकि पानी में से लवण को पृथक करने के लिए उसे उबालना पड़ता था। इसके लिए पर्याप्त मात्रा में ईंधन की आवश्यकता होती थी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसी प्रकार की एक विधि के अन्तर्गत पानी को तप्त करने के लिए आणविक ऊर्जा के प्रयोग से अब तत्सम्बन्धी व्यय को ४० रुपये प्रति हजार गैलन से घटाकर लगभग २ रुपये प्रति हजार गैलन तक ला देना सम्भव हो गया है। आणविक बिजली से संचालित निक्षारीकरण संयंत्र प्रति-दिन केवल ५० हजार गैलन शुद्ध जल तैयार करने के बजाय, अब प्रतिदिन १५ करोड़ गैलन शुद्ध जल तैयार करने में समर्थ है। इस प्रकार का संयंत्र बिजली भी उत्पन्न करता है और इस प्रकार मनुष्य की दो मूलभूत—पानी और बिजली की—आवश्यकताएं पूर्ण करता है।

किन्तु, ऐसा प्रतीत होता है कि मनुष्य की पेयजल सम्बन्धी समस्या का अन्तिम समाधान मौसम को नियन्त्रित करके ही प्राप्त किया जा सकेगा। अगर हम जहां-कहीं आवश्यक हो, वहां पानी बरसा सकें, और बाढ़ आने की संभावना उत्पन्न होने पर उसे कहीं और बहाकर ले जा सकें, तो पानी की व्यवस्था सम्बन्धी अन्य प्रणालियों की आवश्यकता बहुत ही कम रह जायेगी। वैज्ञानिकों को कुछ प्रकार के बादलों से पानी बरसाने में सफलता मिल चुकी है, लेकिन इस प्रकार की कृत्रिम वर्षा को आवश्यकता के लिए पर्याप्त मात्रा में उत्पन्न करना अभी सम्भव नहीं हो सका है।

फिर भी, वैज्ञानिकों को विश्वास है कि वह दिन दूर नहीं जब मनुष्य मौसम को अगर नियन्त्रित नहीं तो कम से कमप्रभावित करने में तो अवश्य ही सफल हो जायेगा। इस प्रकार के प्रयोगों के अन्तर्गत, झंझावातों की विनाशक शक्ति को विच्छिन्न करके उनके साथ प्रवाहमान जल की भारी मात्रा को ठिकाने लगाने के प्रयोग शामिल हैं।

विकसित जल-व्यवस्था के अन्य पहलुओं में, सरिता-प्रणालियों का सुधार भी एक है। अमेरिका में जल-व्यवस्था सम्बन्धी प्रयासों के अन्तर्गत इस बात को उस समय से शामिल किया गया है, जब १९०७ में एक आयोग ने यह सुझाव दिया कि राष्ट्र की नदियों को सुरक्षित रखने के लिए सर्वांगपूर्ण आयोजन होना चाहिए। समय-समय पर नई नदी विकास-योजनाएं लागू की जाती हैं। इनमें टेनेसी घाटी परियोजना तो विश्व भर में विख्यात हो चुकी है। इस समय सर्वेक्षणों के अन्तर्गत नदी बेसिन आयोग नियुक्त है, जिन्होंने अमेरिका को लगभग १० योजना क्षेत्रों में विभाजित किया है। इसके साथ ही, कई राज्यों ने बाढ़-नियन्त्रण, प्रदूषण की रोकथाम और जल-सुधार सम्बन्धी प्रयासों को क्षेत्रीय स्तर पर समन्वित करना प्रारम्भ कर दिया है। ●

घबराओ मत !

लॉर्ड बर्कले की गाड़ी जंगल में से होकर गुजर रही थी। एक डाकू ने आकर उसे घेर लिया। और, पिस्तौल तानकर कहा—"जो कुछ रुपया पैसा तुम्हारे पास हो, वह यहां रख दो, नहीं तो भगवान् को याद करो। अधिक अवसर मैं किसी को नहीं दिया करता।"

"परन्तु सुनो तो मेरा नाम बर्कले है……।"

"हां हां जानता हूं। तुम कहा करते हो कि अकेले-दुकेले डाकू के लिए तो मैं अकेला ही काफी हूं। मैं भी आज तुम्हारी वीरता देखूंगा।"

"मैं ठीक ही कहा करता हूं। यदि तुम्हारा सहायक तुम्हारे पीछे न खड़ा होता तो मैं आज तुम्हें बता देता कि मैं सत्य कहा करता हूं।"

डाकू ने सहायक की बात सुनी। तो आश्चर्य से पीछे की ओर देखा। जरा रुख बदलने की ही देर थी। बर्कले ने जेब से पिस्तौल निकाला और उसकी गोली "दन" से डाकू का अन्त करती हुई निकल गई।

(पृष्ठ १६ का शेष)

'जी प्रधान जी, जी नम्बरदार जी, मैं अब कहां से बर्तन भांडे, थाली, थाल व चमचे लाऊं और आपको लौटाऊं। वे तो मैंने लगा दिये थे ठिकाने और उसके बाद ही चला था आपको जिमाने। मैंने तो उसी दिन आपको ही नहीं हर ग्रामवासी को बताया था, साफ साफ ही तो समझाया था और कुछ भी नहीं छिपाया था, क्या आपने सुना नहीं था कि मैंने भोजन कराते समय जोर शोर से यह वाक्य भी गुंजाया था "खाओ पिओ आपका अपना—मदनू का पंखा ही पंखा। आपके थे चादर, फट्टे, पट्टे व बर्तन उन्हें बेच-बाचकर ही मैं जो लाया था धन। उसी से खरीदा गया था अधिकांश अन्न और फिर कर दिया आप सब पंचों को ही अर्पण। अब मैं कहां से बर्तन लाऊं। जो आपको लौटाऊं।" और फिर सभी ने अपना-सा मुंह लिया और लौट आए। उसने भइया सारे ग्राम के साथ-साथ मुझे भी तो चूना लगाया है। मैं तो स्वयं को बड़ा गुरु समझता था उसने तो मेरे भी कान काट लिये।"

जिज्ञासानन्द ने सदानन्द की यह कथा सुनी और फिर बोले 'भइया हर बुराई में भलाई भी निहित होती है। अब तुरन्त उस मदनू को यहां लिवा लाइए। आदमी बड़े काम का है, भले ही आपके गांव का है। आप उसे अपनी अन्तर्राष्ट्रीय चौपाल का चौधरी बनाइए। वह आपके गुरुओं व चेलों सभी के कान काट लेगा। तुम्हारी भी चिर साध मिट जाएगी।

सुनते ही सदानन्द जी बौखलाए और बोले मेरे जख्मों पर नमक न छिड़को माई डियर जिज्ञासानन्द। अन्यथा...

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

★

भारत के सुप्रसिद्ध दार्शनिक आचार्य रत्नसिंह जी ने विमोचन समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि जन-ज्ञान आर्यसमाज क दस सूत्री कार्यक्रम को पूर्ण करने में लगेगा। और हमें विश्वास है कि ऋषि का लक्ष्य पूर्ण करने में सफल होगा।

★

मंगल कामनाएं

परम पूजनीय,

अध्यक्ष महोदय जी, दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-५

सादर नमस्ते !

दिनांक १-२-७६ को प्रातः अखबार में पढ़ा कि जन-ज्ञान (साप्ताहिक) के प्रथम अंक का विमोचन होगा। सोचा शामिल होना चाहिए पर फिर शाम तक टाल दिया। शाम को पांच बजे घर गया तो आपका निमंत्रण पत्र मिला कि अध्यक्षता श्री रामगोपाल शालवाले, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कर रहे हैं। तो इतनी खुशी हुई कि वर्णन करना मेरे बस की बात तो नहीं है। आखिर भाई-भाई थे समझौता (मिलन) हो ही गया। मैं समझता हूँ कि अब आर्यसमाज अच्छी तरह उन्नति करेगा। क्योंकि दो साथी एकजुट हो गये हैं।

समारोह में शामिल हुआ। समारोह अच्छा रहा। बहिन आभा का वेदगान अच्छा लगा। भगवान से प्रार्थना है कि जन-ज्ञान मासिक से साप्ताहिक बना और शीघ्र ही एक दिन वह आयेगा जबकि यह रोज प्रातः हमें दैनिक पत्र के रूप में मिलेगा।

मंगलमय भविष्य की कामनाओं सहित।

धन्यवाद

विनीत

रामकृष्ण पुरम्, नई दिल्ली-२२ रामचन्द्र आनन्द

मुद्रक-प्रकाशक—सम्पादक पंडिता राकेश रानी द्वारा सैनी प्रिन्टर्स दिल्ली में छपा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

जन-ज्ञान [साप्ताहिक]
वेद मन्दिर, १५९७ हरध्यानसिंह मार्ग
नई दिल्ली-११०००५ । दूरभाष : ५६६६३९

रविवार
२२ फरवरी
१९७६

रजिस्टर्ड नं०
D-(C) 619

Digitized by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

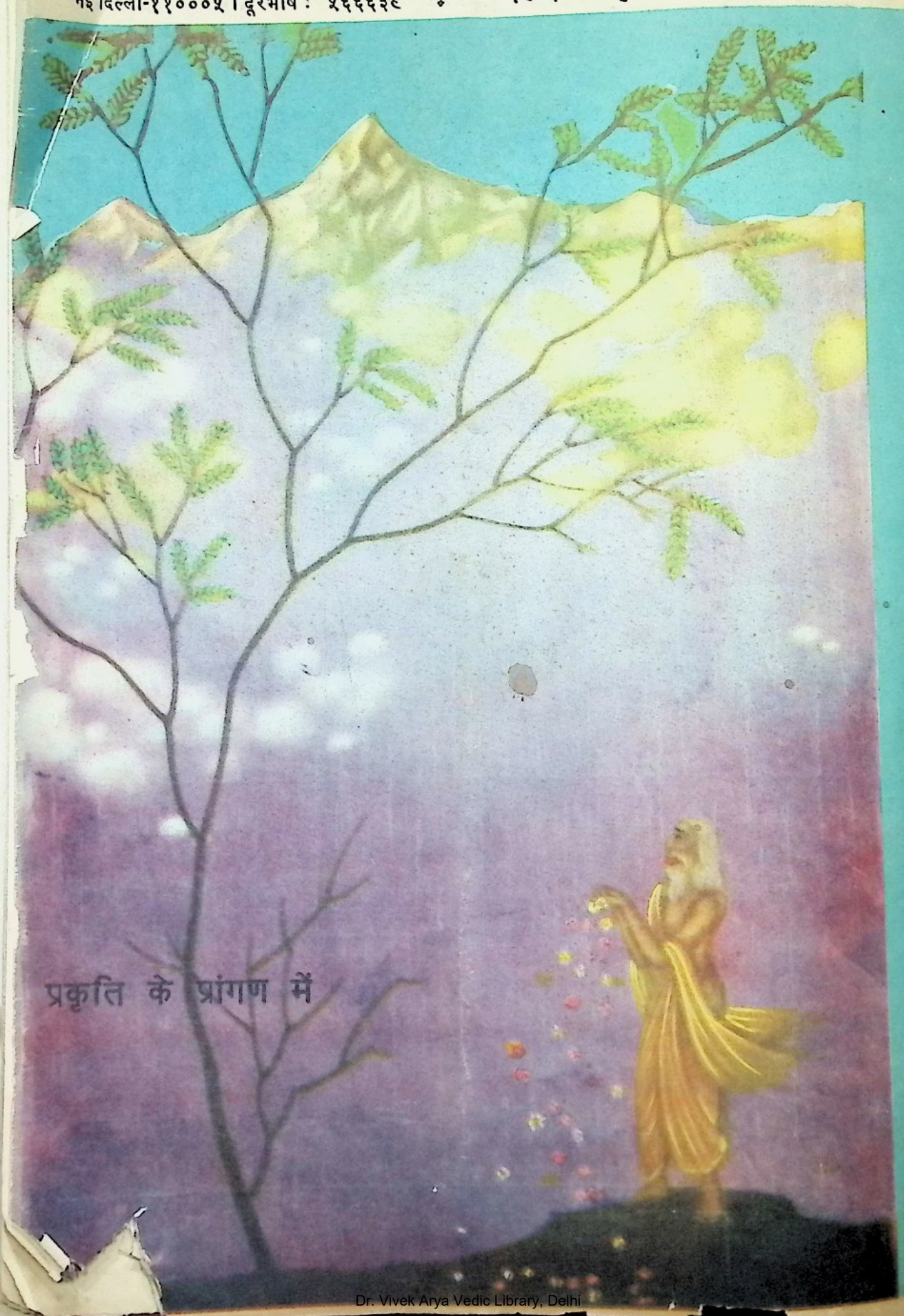

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi